₹ 10

www.kewalsachtimes.com

मई 2024

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PS.-78

केजरीवाल किसके सगे

'आप' के या 'अपने आप' के !

जन-जन की आवाज है केवल सच

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

www.kewalsach.com

www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

एस.एन. कृष्णन
01 मई 1932

अनुष्का शर्मा
01 मई 1988

अशोक गहलोत
03 मई 1951

उमा भारती
03 मई 1959

तृष्णा कृष्णन
04 मई 1983

सनी लियोनी
13 मई 1981

जरीन खान
14 मई 1980

माधुरी दिक्षित
15 मई 1967

राम पेथीनेनी
15 मई 1988

सोनल चौहान
16 मई 1987

स्व.पंकज उदास
17 मई 1951

चार्मी कौर
17 मई 1987

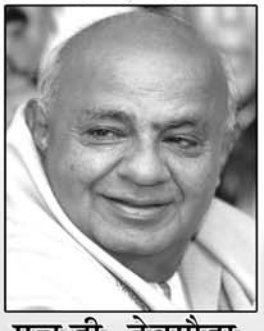

एच.डी. देवगौड़ा
18 मई 1933

एनटीआर जूनियर
20 मई 1983

महबूबा मुफ्ती
22 मई 1959

करण जोहर
25 मई 1972

नितिन गडकरी
27 मई 1957

रवि शास्त्री
27 मई 1962

पंकज कपूर
29 मई 1954

परेश रावल
30 मई 1950

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
COLOUR	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
B & W	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

आधुनिकता के नाम पर नंगापन

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

Sex का माहौल Social Media पर इस कदर कायम है कि Youth फैशन के नाम पर नंगापन पर उतारू हो चुका है जबकि एक हिस्सा भारतीय संस्कृति एवं संस्कार के साथ रामायण और भागवत गीता के अध्याय पर भी चर्चा कर रहा है। Mobile की दुनिया जहां एक तरफ सनातन धर्म पर वर्चस्व बढ़ाने की कोशिश में जुटा है तो 65 प्रतिशत इसका इस्तेमाल ईर्ष्या, व्यंग्य, आधुनिकता के नाम पर नगापन का Advertisement हावि हो चुका है और क्या बच्चे - क्या बूढ़े सब इससे प्रभावित हो रहे हैं। आधुनिक बनने एवं दिखाने के कारण संयुक्त परिवार टूटता गया और बड़ी तेजी से टूट भी रहा है और उनको तोड़ने के लिए Film, TV serial, Web series में कंडोम एवं सेनेट्री पैड का प्रचार इस कदर मोबाइल पर भी दिखाया जाने लगा है और न चाहते हुए भी बच्चे को जवान करने की कोशिश की जा रही है और उसमें सफलता भी मिल रही है। आधुनिक दुनिया में नंगापन को विकसित सोच का बताया जाता है कि हम बहुत तीव्रता के साथ आगे बढ़ रहे हैं भले हीं हमारे घर के संस्कार उसकी इजाजत नहीं देते। यह भी सच है कि जिस प्रकार की शिक्षा घर में अभिभावक अपने बच्चों को देते हैं उसका प्रभाव उनके जीवन में पड़ता ही है। कोरोना काल में शिक्षा के नाम पर जिस प्रकार बच्चों के हाथ में मोबाइल आया उसके बाद सोसल मीडिया ने हर घर को नंगा करने का रास्ता बना लिया और आप न चाहते हुए भी Blue Film को देखने को मजबूर है। एक घंटा भी आपने सोसल साइट पर समय दिया तो नंगापन का व्यवसाय आपको देखने को मिल जायेगा। वैसे भी गंदी बातों एवं विचारों को लोग स्वीकारें या नहीं लेकिन एकबार देखना अवश्य चाहते हैं।

Fashain की दुनियां में भारत नंगापन की दिशा में कदम बढ़ाता दिख रहा है और खुद को बदलते आधुनिक भारत का हिस्सा मानता है। भारत दुनिया में अपनी पहचान संस्कार एवं चरित्र निमार्ण के साथ-साथ संयुक्त परिवार और पड़ोसी को भी अपने रिश्तेदार की तरह प्रतिष्ठा करने की वजह से ही विश्व भर के लोग भारतीय संस्कृति को समझने भारत आते हैं। अपना परिवार तो दूर पड़ोस के चाचा एवं भैया का भी लिहाज होता था लेकिन Techonology की दुनिया में सबकुछ बदलता जा रहा है बल्कि Social media के दौर में खुद को काबिल घोषित करने के चक्कर में अपने नंगेपन का परिचय Social site पर दे रहे हैं। मोबाइल का switch on करते ही आपको पथभ्रष्ट करने का अभियान शुरू हो जाता है। एक तरफ जहां जय श्रीराम, जय श्री कृष्ण, हर हर महादेव, जय माता दी, राधे-राधे लिखते लिखते जहां सनातन धर्म का दौर शुरू होता है लेकिन Mobile पर उंगली उपर नीचे करते ही भगवान की भक्ति के सरोवर से सीधे sex की दुनिया में प्रवेश करा दिया जाता है। Short video में View बढ़ाने के चक्कर में नंगेपन का खेल धड़ल्ले से चल रहा है और सरकार सभी बातों को जानती है और राजनेता भी इसमें मशगूल हैं तथा ऐसी हरकतों को sex education से जोड़कर देखा जाता है। जहां असंसदीय भाषा का इस्तेमाल करने पर लोग रिश्ता अलग कर लेते थे लेकिन आधुनिक भारत में लिखकर एवं बोलकर माँ-बहन की गाली तक दी जाती है और हम उसमें जातिवाद एव पार्टीवाद के कारण उसका सम्मान भी करते हैं तथा उसपर कमेंट भी करते हैं। Mobile और TV पर advertisement के नाम जिस प्रकार बनियान का, कंडोम का, माला डी का, व्वीसपर का, वियाग्रा का व्यापार किया जा रहा है उसकी वजह से संयुक्त परिवार तो छोड़िए अब तो एकल परिवार भी अपने बच्चों के साथ ऐसा प्रचार को मजबूरीवश देख रहे हैं। news के समय में भी इस प्रकार का विज्ञापन आना आधुनिकता के आड़ में नंगेपन को विकसित करने का सोची-समझी साजिश है। बदलते परिवेश में खुद को मॉर्डन कहलाने के फिराक में स्वयं माता पिता अपने बच्चों से यह सवाल करते हैं कि School में Girl Friend or Boy Friend बनाया की नहीं? वैसे भी प्राईवेट School में छोटे-छोटे कपड़े आधुनिकता का परिचय देती है लेकिन उसके आड़ में Sex का भी बाजार बनता जा रहा है, जहां इस प्रकार के बातों को सोचने के लिए एक उम्र का पड़ाव को जायज माना जाता था वहीं Sex Education के नाम पर नंगापन का विकास किया जा रहा है। नंगापन और फूहड़ता को राजनीति में भी स्पष्ट तौर पर देखने को मिल रहा है बल्कि मीडिया में भी भड़काऊ ड्रेस पहनकर समाचार पढ़ा जा रहा है और समाज से मिलने वाली प्रतिक्रिया पर पुरूषों की गंदी सोच को लताड़ा जाने लगा है। युवा अवस्था वालों को अब खुलेआम पोर्न देखने को मजबूर किया जा रहा है। प्रतिष्ठित न्यूज चैनल भी इस खेल में धन कमाने की लालच की वजह से हर ब्रेक में एक कन्डोम का विज्ञापन आता है। बच्चा हो या बुढ़ा, सबको नंगापन बनाने के लिए इस प्रकार का advertisement में गाना चलता है **'मन क्यों बहका रे बहका आधी रात में'** और इस गाने को इतने अश्लिल ढ़ंग से कपड़ा उतारते और बेड पर लेटते दिखाया जाता है कि परिवार व बच्चों के बीच बैठे एक सभ्य परिवार का सर शर्म से झुक जाता है। एक फेसबुक पर यह लिखा हुआ एक भारतीय महिला ने अपनी पीड़ा जाहिर की कि क्या हम किसी भी वस्तु के प्रचार को सभ्य ढंग से नही दिखा सकते? क्या हर सामान को बेचने के लिए (चाहे वह एक पानी का बोतल हो या अंडरवेयर और बनियान, चाहे वह परफ्यूम हो या शेविंग ब्लेड) इनके विज्ञापनों में अधनंगी लड़कियों, किसिंग सीन का होना, भद्दे तरीके से लिपटा लिपटी दिखाना आवश्यक है? हद तो तब हो गयी जब एक बच्चा कमरे में बैठा कार्टून चैनल देख रहा होता है और बच्चों के उस कार्टून चौलन पर व्हिस्पर का advertisement आ जाता है... अब नौ साल के बच्चे को खेलने कूदने की उम्र में व्हीस्पर और कंडोम का प्रचार दिखाकर यह सोसल मीडिया और कम्पनियाँ क्या हासिल करना चाहती है यह बात किसी को समझ में नही आया! न जाने कितने साल बीत गए इसी नंगेपन के कारण मुझे अपने घर में बैठ कर किसी म्यूजिक चौनल पर फिल्मों के गाने सुने और बच्चों के सामने टीवी पर फिल्म देखे हुए... क्या ये मेरे राइट टू वॉच में सेंध नही है..? मैं क्या देखूँ क्या नही... ये कोई और ही तय करेगा क्या...? क्या इस जंगली और अश्लील मीडिया और विज्ञापनों पर कोई कानूनी रास्ता अपनाया जा सकता है या नही...? क्या समाज में उन लोगों को जीने का कोई हक नही है जो अपने परिवार को इस गंदगी से दूर रखना चाहते हैं..? मैं अपने मीडियातंत्र सरकार, समाजविद्, सभी से यह सवाल पूछना चाहती हूँ कि.. क्या ये मेरी अकेले की समस्या है...? क्या उनके घरों में टीवी नही चलता, क्या उनको भी शर्म आती है? वास्तव में आधुनिकता के नाम पर नंगा करने की कूटनीति जिस प्रकार मन मस्तिक पर हावी होती जा रही है उससे तो साफ हो चुका है कि जहां पश्चिमी सभ्यता हरे-कृष्णा, हरे राम, राधे-राधे में लीन हैं वहीं भारतीय जनमानस को आधुनिकता के नाम पर नंगा किया जा रहा है। आज भी India में sex को पर्दा में रखा जाता है क्योंकि प्रेम का महत्व दिया जाता है। एक कहावत है कि नंगा चलना फैशन है तो हम सब बड़े अभागे हैं, इस मामले में आज भी कुत्ते हम सब से आगे हैं। वक्त रहते तो इस पर पाबंदी नही लगायी गयी तो हर घर नंगा होंगा और अपनी आधुनिकता पर शर्म आयेगी।

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

वर्ष:- 13, अंक:- 155 माह:- मई 2024 रू. 10/-

Editor

Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor

Arun Kumar Banka 7782053204
Surjit Tiwary 9431222619
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)

Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)

Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor

Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor

Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor

Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565
Kamod Kumar Kanchan 8971844318

Sub. Editor

Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922
Brajesh Sahay 7488696914

Bureau Chief

Sanket kumar Jha 7762089203
Sagar Kumar 9155378519

Bureau

Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer

Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड

ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड

अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड

निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड

आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड

आवश्यकता है

गुजरात हेड

आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

पंजाब हेड

आवश्यकता है

हरियाणा हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

उड़ीसा हेड

आवश्यकता है

आसाम हेड

आवश्यकता है

हिमाचल हेड

आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
मो०- 9868700991, 9431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 9433567880, 9339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव, द्वितीय त्तल,
फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 9308815605

मध्यप्रदेश कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार पाठक
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
मो०- 8109932505,

विशेष प्रतिनिधी

भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,
मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

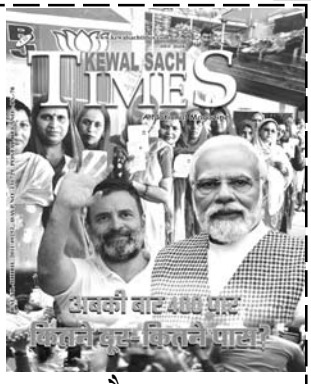

अप्रैल 2024

प्रभाव

मिश्रा जी,

केवल सच टाइम्स, पत्रिका का अप्रैल 2024 अंक का संपादकीय ''विश्व में बढ़ता सनातन का प्रभाव'' को पढ़ा जिससे मैं प्रभावित भी हूं की सनातन संस्कृति पर सकारात्मक आलेख अब लिखा जाने लगा है। ऐसे भी कई अंक का संपादकीय को मैंने पढ़ा है और आपकी लेखनी स्पष्ट और साफ-सुथरी है तथा बगैर किसी मिलावट के निस्पक्ष विषयों पर आपकी लेखनी रहती है। सनातन संस्कृति का विश्व के पटल पर किस प्रकार से प्रभाव है उसको भी आपने उदाहरण के साथ लिखा है कि इंडोनेशिया और विभिन्न देशों में कैसे महत्व मिल रहा है। सटीक विश्लेषण के साथ जानकारीप्रद बाते भी हैं।

● **सतीष जयसवाल, करोल बाग मॉर्केट, नई दिल्ली**

सेनेटरी पैड

संपादक महोदय,

''महिला अधिकारों की खिल्ली उड़ाती कॉपोरेट संस्कृति'' पर अप्रैल 2024 माह का खबर वास्तव में दिल को झकझोर देता है कि आज के परिवेश में भी महिलाओं को चोरी छिपे ही मेडिकल शॉप से सेनेटरी पैड को घर लाना पड़ता है। कहने के लिए तो कॉरपोरेट कार्यालयों में महिलाओं के इस समस्या से निजात दिलाने का वादा तो किया जाता है लेकिन वास्तविक सच्चाई ठीक विपरीत है। खबर में पूरी गंभीरता एवं सच्चाई है कि किस पकार महिला के अधिकार का हनन हो रहा है। पत्रिका विभिन्न विषयों पर पाठकों के लिए सामग्री का संकलन करके जागरूक करता है। मुझे अच्दी लगी जानकारी।

● **मधु सक्सेना, बूटी मोड़, राँची, झारखंड**

अन्दर के पन्नों में

10

Will anti-Pakistan rhetoric....33

400 पार

संपादक महोदय,

अप्रैल 2024 अंक में पत्रकार अमित कुमार की आवरण स्टोरी ''अबकी बार 400 पार कितने दूर-कितने पास'' में लोकसभा चुनाव के सभी सीटों को लेकर काफी कारगर व्याख्या की है कि किस प्रकार से मोदी के कुनबे को 400 के पार कैसे होगा और किन कारणों की वजह से यह आंकड़ा नहीं पार करेगा की हरेक पहलुओं को भी फोकस करके लिखा गया है। एक तरफ मोदी का कुनबा और दूसरी तरफ इंडी गठबंधन का चेहरा को लेकर भी विस्तार से राजनीतिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की गई है। 2014, 2019 के बाद 2024 के लोकसभा चुनाव में मोदी को भी काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। कुल मिलाकर यह आवरण लोकसभा की सही समीक्षा करती दिखी।

● **गौरीशंकर रजक, रामकृष्णा नगर, पटना**

फायरिंग

संपादक महोदय,

फिल्म जगत की खबर को भी केवल सच टाइम्स पत्रिका ने इस अंक में उचित स्थान दिया है। ''सलमान के घर के बाहर फायरिंग'' आलेख में 14 अप्रैल की घटना ने सलमान की लोकप्रियता को भी काफी हद तक बढ़ा दिया है तथा महाराष्ट्र की सरकार की बेचैनी। कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई पहले भी सलमान खान को जान से मारने की धमकी दे चुका है। फायरिंग करने वाले युवकों की जानकारी भी सटीक दी गई है और पुलिस की तत्परता की बात भी बहुत अच्छी है की इस घटना को लेकर महाराष्ट्र पुलिस चौकस है। केवल सच टाइम्स पत्रिका का यह अंक वास्तव में काफी रोचक एवं तथ्यों पर आधारित हैं। चुनाव, अपराध एवं भ्रष्टाचार की खबरें सटीक एवं प्रमाणिक प्रकाशित है।

● **कौटिल्य राय, माटूंगा बाजार, मुम्बई, महाराष्ट्र**

आबकारी घोटाला

मिश्रा जी,

दिल्ली शराब घोटाले के मामले में दिल्ली के तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरबिन्द केजरीवाल को ईडी ने ऐसा दबोचा है कि वह राहत की भीख मांगते दिख रहे हैं। अप्रैल 2024 अंक में अमित कुमार की खबर ''आबकारी घोटाला केजरीवाल के बाद के कविता जेल में'' भी पूरे मामले की सटीक पड़ताल करके खबर को लिखा गया है। आप पार्टी का मंत्री, उप मुख्यमंत्री, मुख्यमंत्री और सांसद तक आबकारी के मामले में जेल का मुंह देख चुके हैं। अरबिन्द केजरीवाल की राजनीति पर अब दिल्ली की जनता भी शक की निगाहों से देखने लगी है। इस अंक की सभी खबरें बेजोड़ एवं तथ्यों पर आधारित हैं। पत्रकारों को धन्यवाद।

● **पंकज सिंह, सेक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली**

अवैध खनन

ब्रजेश जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के अप्रैल 2024 अंक में कई राज्यों की महत्वपूर्ण खबरों को स्थान मिला है। ''अवैध खनन माफियाओं के हमलों में कई अफसरों ने गवां दी अपनी जान'' खबर में राज्य सरकार के द्वारा किये जा रहे बुलडोजर का प्रयोग से जहां माफियाओं के हौसले को पस्त किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने स्पष्ट निर्देश प्रशासन को दे रखा है कि अवैध खनन को सरकार बर्दास्त नहीं करेगी क्योंकि पुलिस प्रशासन पर माफियाओं के द्वारा हो रहे हमले से उनका मनोबल बढ़ा हुआ है। सरकार के इस फैसले से पदाधिकारी का मनोबल बढ़ा है और बुलडोजर की रफ्तार से माफियाओं में दहशत कायम है। सटीक खबर है।

● **किशोर सिन्हा, रेलवे क्वार्टर 23, भोपाल**

Ex-Congress leader 41

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी
'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
व्यवसायी
पटना, बिहार
7360955555

एक नजर

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।

A/C No.	:-	20001817444
BANK	:-	State Bank Of India
IFSC Code	:-	SBIN0003564
PAN No.	:-	AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of "APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

Registered Under the Indian Society Act 21, 1880

East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020

Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

APNA GHAR

Now in the State of Bihar & Jharkhand

Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence in the lives of many Sr. Citizens.

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

A/C No.	-	**0600010202404**
Bank Name	-	**United Bank of India**
IFSC Code	-	**UTBIOKKB463**
Pan No.	-	**AAAAK9339D**

देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को सुचारु रूप से स्वस्थ्य और स्वच्छ रखने के लिये प्रत्येक पांच बर्षो के बाद देश के लोगों को अपने मत के अधिकार का प्रयोग कर लोकतंत्र के मंदिर में वैसे प्रतिनिधि को भेजते हैं जो देश की सुरक्षा के साथ साथ देश के 140 करोड़ जनता की मुलभुत सुविधाओं और उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेकर देश के संवैधानिक ढांचो को मजबूत कर गरीबों के विकास के लिये रास्ता बनाएं और देशवासियों की हिफाजत करे.देश में चल रहें लोकसभा आम निर्वाचन 2024 कई मायनों में महत्वपूर्ण है. एक तरफ एनडीए और दूसरी तरफ इण्डिया गठबंधन है. दोनों का एजेंडा अलग है. बीते दस बर्षो से देश का बागडोर भाजपा एवं गठबंधन के घटक दलों के हाथ में है, चुनाव क दौरान आयोजित चुनावी सभा में सभी दलों ने अपने मेनिफिस्टो को पुरे जोर शोर के साथ जनता के बीच रख रही है. बीते दस बर्षो में भाजपा क शाशन काल में कई ऐतिहासिक फैसले हुए जिसमें कश्मीर में धारा 370, तीन तलाक,अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, कृषि कानून, नोटबंदी, जीएसटी, सवर्णो को दस प्रतिशत आरक्षण सहित कई फैसलों एवं कानूनों को लागु करने के बाद देश के आम नागरिकों पर इसका क्या असर पड़ा है वह लोकसभा चुनाव समाप्ति के बाद मिली जनादेश से होंगी. लेकिन इन सब चर्चाओं के बीच खासकर बिहार और उत्तर प्रदेश का चुनाव काफी खास मायने रखता है. वैसे तो यह कहा जाता रहा हैं की देश में लोकतंत्र की रक्षा एवं नई सरकार के गठन में बिहार की भूमिका बहुत बड़ी होती है. बिहार एवं उत्तर प्रदेश के बगैर लोकसभा में सरकार का बनना असम्भव होता है। अगर हम बिहार की बात करें तो अब तक छठा चरण के चुनाव के बाद मात्र एक चरण का चुनाव बाकी है, बिभिन्न लोकसभा चुनाव क्षेत्रों में चुनावी सभा को एनडीए एवं इण्डिया गठबंधन के शीर्ष नेताओं ने जहां सरकार की उपलब्धियों को गिनाया वहीं महागठबंधन के नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री को सबसे बड़ा झूठा बताते हुए इस बार के चुनाव को संविधान को बचाने, लोकतंत्र की रक्षा करने एवं रोजगार के लिये लड़ाई करने की बात कही जा रही हैं. जैसे जैसे चुनाव के अंतिम चरण आते जा रहें हैं वैसे वैसे जुबानी जंग भी तेज होती जा रही है.बिहार में सियासी घमासान के बीच चल रहें चुनाव की स्थिति एवं मतदाताओं के मिजाज के अनुसार विभिन्न लोकसभा क्षेत्रों में वोट की स्थिति और मतदान का प्रतिशत से बनते बिगड़ते प्रत्याशियों के समीकरण पर प्रस्तुत है **मिथिलेश कुमार** और **अमित कुमार** की चुनावी रिपोर्ट :-

तीसरे चरण में 5 संसदीय क्षेत्रों में मतदान 60 फीसदी के पार पहुंच गया। बड़ी संख्या में मतदाता बूथों पर पहुंचे और अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। शाम छह बजे तक इस चरण में कुल 60 फीसदी मतदान हुआ जबकि कई बूथों पर कतारबद्ध होकर मतदाता अपने मतदान के क्रम की प्रतीक्षा कर रहे थे। साथ ही, इस चरण के 54 उम्मीदवारों के भाग्य ईवीएम में बंद हो गये।बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) एचआर श्रीनिवास ने बताया कि 2019 के लोकसभा चुनाव में इस चरण के संसदीय क्षेत्रों में 61.22 फीसदी मतदान हुआ था। लेकिन इस बार मतदान की अंतिम रिपोर्ट मिलने पर मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी की संभावना है। शाम छह बजे तक तीसरे चरण के संसदीय क्षेत्रों में झंझारपुर में 55.50 प्रतिशत, सुपौल में 62.40 प्रतिशत, अररिया में 62.80 प्रतिशत, मधेपुरा में 61.00 प्रतिशत और खगड़िया में 58.20 प्रतिशत मतदान हुआ। बिहार के सीईओ श्री श्रीनिवास ने बताया कि इस चरण के मतदान को लेकर गठित 9848 बूथों में अररिया में 1547 अतिरिक्त बूयों को चिह्नित किया गया था जहां छायादार स्थान या कमरे नहीं थे,

वहां शामियाने कीव्यवस्था की गयी थी। सभी बूथों पर पेयजल एवं अन्य नागरिक सुविधाओं के इंतजाम किए गए थे।

☞ **मधेपुरा :- नीतीश के वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश :-** मधेपुरा का वोटिंग ट्रेंड क्या मैसेज दे रहा है? मौजूदा समय में बिहार में तीन प्रकार के वोट बैंक हैं। एक सीएम नीतीश कुमार का वोट बैंक है। एक मजबूत वोट बैंक बनाने में पीएम नरेंद्र मोदी भी कामयाब रहे हैं।जबकि, वर्षों से राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव का एक अपना वोट बैंक रहा है, जो अब तेजस्वी यादव के नाम पर शिफ्ट हो गया है। तेजस्वी यादव ने इस बार नीतीश कुमार के वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश जरूर की है। खासकर ओबीसी वर्ग में, लेकिन मोदी और नीतीश के मिल जाने से ये गठबंध न मजबूत मालूम पड़ रहा है। 2019 के चुनाव में मधेपुरा में 66.3 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। इस चुनाव में जदयू के दिनेश यादव ने कद्दावर समाजवादी नेता और राजद कैंडिडेट शरद यादव को 3 लाख से ज्यादा वोटों से हराया था। 2014 के चुनाव में मधेपुरा में 60 फीसदी वोटिंग हुई थी। तब यहां राजद के पप्पू यादव ने जदयू के शरद यादव को 56 हजार वोटों से हराया था।

☞ **अररिया**- यहां ग्रामीणों के अग्रेसिव वोटिंग का राजद को मिल सकता है लाभ पॉलिटिकल एक्सपर्ट कहते हैं कि इस बार अररिया में मुस्लिम और यादव यानी लालू की एमवाई समीकरण ने अग्रेसिवली वोटिंग की है। मुस्लिम और यादव बहुल क्षेत्रों में जमकर वोटिंग हुई हैं। वहीं, शहरी क्षेत्रों में बूथ तक पहुंचने वाले लोगों की संख्या में गिरावट आई है। इसका फायदा राजद के कैंडिडेट को मिल सकता है।रोजगार नहीं होने की वजह से बड़ी तादाद में लोग अररिया से काम की तलाश में पलायन कर जाते हैं। चुनाव के समय मताधिकार का प्रयोग करने नहीं आ पाते हैं। यही वजह है कि चुनावों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक निर्णायक साबित हो रही हैं। अररिया का वोटिंग ट्रेंड्स पिछले चुनाव में अररिया हाई वोटर्स टर्न आउट वाला सीट था। यहां 81 फीसदी वोटिंग हुई थी। इसमें बीजेपी के प्रदीप सिंह ने राजद के सरफराज आलम को 1.37 लाख वोट से हराया।2014 के चुनाव में अररिया में 61.5 फीसदी की वोटिंग हुई थी। तब राजद के तस्लीमुद्दीन ने बीजेपी के कैंडिडेट प्रदीप सिंह को 1.46 लाख वोट से हराया था। 2009 में अररिया में 55.7 फीसदी वोटिंग हुई थी, तब भाजपा के प्रदीप कुमार सिंह 22 हजार वोट से जीतने में सफल रहे थे।पिछले चुनाव की तुलना में इस बार खगड़िया में वोटिंग ग्राफ में बहुत ज्यादा अंतर नहीं रहा है। लगभग पिछले चुनाव के बराबर ही इस बार भी वोटिंग हुई है। ऐसे में खगड़िया के स्थानीय लोगों का माने तो इसका लाभ एनडीए के कैंडिडेट को मिल सकता है।इसका सबसे बड़ा कारण है पुरुषों की तुलना में महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत अधिक रहना। बिहार में महिलाएं अभी भी नीतीश कुमार की कोर वोट बैंक मानी जाती हैं। खगड़िया में 2019 मे 58.8 प्रतिशत की वोटिंग हुई थी। इसके बाद भी एनडीए कैंडिडेट महबूब अली कैसर के जीत का मार्जिन 2.48 लाख था। महबूब अली कैसर का मुकाबला वीआईपी के मुकेश सहनी से था। 2014 के चुनाव में खगड़िया में 60.1 फीसदी वोटिंग हुई थी। तब एलजेपी के कैंडिडेट महबूब अली कैसर ने राजद के कृष्ण कुमारी यादव को 76 हजार वोटों से हराया था। 2009 में खगड़िया में 46.5 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। इसमें जदयू के दिनेश चंद्र यादव 1.38 लाख वोट से जीतने में सफल रहे थे।

☞ **झंझारपुर :-** कम वोटिंग प्रतिशत से एनडीए प्रत्याशी को हो सकता है नुकसान झंझारपुर में गुलाब यादव ने मुकाबले को त्रिकोणीय बना दिया है। ऐसे में पिछले चुनाव से कम वोटिंग क्या संकेत दे रहे हैं। इस सवाल पर झंझारपुर के वरिष्ठ पत्रकार मोहम्मद अजहर हुसैन बताते हैं कि इससे सत्ताधारी दल को नुकसान हो सकता है। वोटर्स मौजूदा सांसद रामप्रीत मंडल के कामों से कुछ ज्यादा खुश नहीं है। पार्टी के खिलाफ भी एंटी इनकंबेंसी का माहौल है। वे कहते हैं कि इस बार जीत-हार का अंतर बेहद कम रहेगा।वहीं, महिला वोटिंग पर्सेंटेज के ग्राफ में बढ़ोतरी पर महिलाएं हमेशा से ही एनडीए के साथ इंटैक्ट रहीं हैं। इसके पीछे का मुख्य कारण सरकारी राशन, शराबबंदी जैसे नीतीश कुमार की लोक कल्याणकारी योजनाएं रही हैं।यहां पिछले चुनाव में 58.3 प्रतिशत की वोटिंग हुई थी। इसमें जदयू के रामप्रीत मंडल ने राजद के गुलाब यादव को 3.23 लाख वोटों से हराया था।2014 के चुनाव में झंझारपुर में 57 फीसदी की वोटिंग हुई थी। इस चुनाव में भाजपा के वीरेंद्र कुमार चौधरी ने राजद के मंगनी लाल मंडल को 55 हजार वोटों से हराया था।2009 के चुनाव में यहां 42.8 फीसदी की वोटिंग हुई थी। तब जदयू से प्रत्याशी रहे मंगनी लाल मंडल 72 हजार वोटों से जीतने में सफल रहे थे। लोकसभा के तीसरे चरण के चुनाव में मंगलवार को 11 राज्यों और केन्द्र शासित दादर-नगर हवेली तथा दमन एवं दीव की कुल 93 सीटों पर शाम पांच बजे तक 60. 19 प्रतिशत मतदान हुआ।

★ **खगड़िया :-** खगड़िया लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का गठन 1957 में हुआ। यह इलाका सात नदियों से घिरा है। कात्यायनी और अजगैबिनाथ महादेव प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। यह इलाका फरकिया के नाम से भी जाना जाता है। यहां मुख्य रूप से केले, मक्का और मिर्ची की खेती होती है। स्वतंत्रता आंदोलन में खगड़िया के श्यामलाल नेशनल हाईस्कूल का योगदान अहम माना जाता है। 1957 से 2019 तक विभिन्न दलों के उम्मीदवार जीते। 2014 और 2019 में महबूब अली कैसर (लोजपा) विजयी हुए। खगड़िया जिला मुख्यालय से करीब 12 किलोमीटर की दूरी पर मां कात्यायनी का मंदिर है, जहां हर साल भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। परबत्ता प्रखंड के भरतखंड में 52 कोठरी 53 द्वार पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहां के कोशी कॉलेज को बिहार का कैंब्रिज भी कहा जाता है। इस कॉलेज की स्थापना आठ जनवरी 1947 को हुई थी। खगड़िया लोकसभा क्षेत्र में यादव, मुस्लिम, निषाद, कुर्मी, कुशवाहा, सवर्ण मतदाता निर्णायक भूमिका में। 2024 के लोकसभा चुनाव में खगड़िया सीट पर इंडिया गठबंधन और एनडीए गठबंधन के प्रत्याशियों के बीच मुकाबले की उम्मीद है। लेकिन एक बात तय है कि विकास, रोजगार और कृषि मुद्दे इस चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। 2024 में भी इस सीट से एलजेपी के प्रत्याशी एनडीए खेमे से होंगे। खगड़िया लोकसभा क्षेत्र बिहार के कुल 40 क्षेत्रों में एक है. यह जिले का प्रशासनिक मुख्यालय भी है. खगड़िया मुंगेर संभाग का हिस्सा है. इसे 10 मई 1981 को एक स्वतंत्र जिला बनाया गया था. इस जिले का क्षेत्रफल 1,486 वर्ग किलोमीटर है. चुनाव आयोग के 2009 के एक आंकड़े के मुताबिक यहां कुल वोटरों की संख्या 1,342,970 है जिनमें 630,898 महिला और 712,072 पुरुष मतदाता हैं. बात करें 2011 जनगणना की तो इन आंकड़ों के मुताबिक

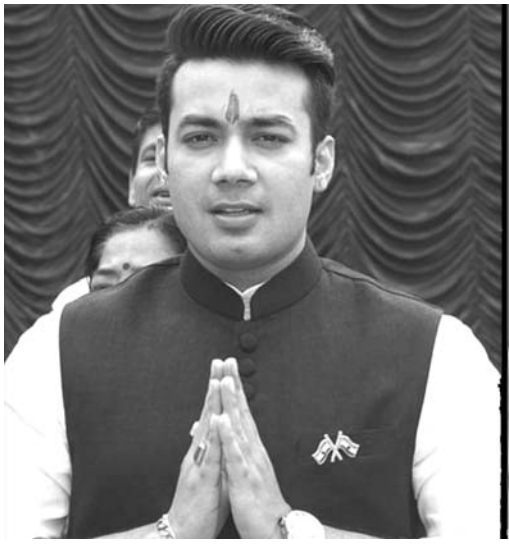

खगड़िया की जनसंख्या 16.67 लाख थी और यहां प्रति वर्ग किलोमीटर 1,122 लोग रहते हैं. इस जिले की 57.92 फीसदी जनसंख्या साक्षर है. इनमें पुरुष 65.25 फीसदी और महिलाओं की साक्षरता दर 49.56 फीसदी है.इस संसदीय क्षेत्र में छह विधानसभा सीटें हैं. इनके नाम हैं-सिमरी बख्तियारपुर, खगड़िया, हसनपुर, बेल्दउर, अलौली (एससी) और परबत्ता. इनमें अलौली विध ानसभा सीट एससी के लिए आरक्षित है. यह जिला बाढ़ ग्रसित रहता है, क्योंकि पांच प्रमुख नदियां - गंगा, गंडक, बागमती, कमला और कोशी खगड़िया के उपखंड के क्षेत्र से होकर गुजरती है. पूरे जिले में कोई पहाड़ी नहीं है और न ही इस जिले में कोई खनिज पाया जाता है. जहां तक भूमि उपयोग पैटर्न का संबंध है, गेहूं जिले की प्रमुख रबी फसल है. जिले के दक्षिणी भाग को छोड़कर बाढ़ और जलजमाव के कारण धान का उत्पादन बहुत कम होता है. मक्के की खेती लगभग पूरे जिले में बहुतायत से की जाती है.

☞ **2019 का जनादेश :-** बिहार की खगड़िया लोकसभा सीट पर 2019 चुनाव में महागठबंधन में शामिल विकासशील इंसान पार्टी के मुकेश साहनी और लोक जन शक्ति पार्टी के चौधरी महबूब अली कैसर के बीच कांटे का मुकाबला था. मुकेश साहनी बॉलीवुड के फेमस सेट डिजाइनर हैं और निषादों की राजनीत में इनका बड़ा दखल रहा है. बहुजन समाज पार्टी, राष्ट्रीय जनसंभावना पार्टी, आदर्श मिथिला पार्टी, आम अधिकार मोर्चा, आम जनता पार्टी राष्ट्रीय, बहुजन मुक्ति पार्टी, जनहित किसान पार्टी, शिवसेना, गरीब जनशक्ति पार्टी के साथ 8 निर्दलीय चुनाव मैदान में थें. लेकिन इस बार भी एलजेडी प्रत्याशी मेहबूब अली कैसर ने अपनी जीत बरकरार रखी, उन्हें 5,10,193 वोट मिले. वीआईपी प्रत्याशी मुकेश सहनी 2,61,623 वोटों के साथ दूसरे नंबर पर रहे, तो वहीं स्वतंत्र रूप से खड़े उम्मीदवार प्रियदर्शी दिनकर ने तीसरा स्थान जब्त किया, उन्हें 51,847 वोट मिले थे. खगड़िया लोकसभा सीट पर 58.90 फीसदी वोटिंग दर्ज किया गया था.

☞ **2014 का जनादेश :-** 2014 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से एलजेपी उम्मीदवार चौधरी महबूब अली कैसर ने जीत दर्ज की. उन्होंने आरजेडी प्रत्याशी कृष्णा कुमारी यादव को हराया. कैसर को जहां 313806 वोट मिले तो यादव को 237803 वोट. वोट प्रतिशत देखें तो कैसर को जहां 35.01 प्रतिशत मत हासिल हुए तो कृष्णा यादव को 26.53 प्रतिशत वोट मिले. इस सीट पर तीसरे स्थान पर नोटा रहा जिसके तहत 23868 वोट दर्ज हुए. कुल वोटों का यह 2.66प्रतिशत हिस्सा था.

☞ **सुपौल :-** सुपौल बिहार के 40 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। इस लोकसभा सीट को 2008 में परिसीमन आयोग की सिफारिशों के बाद गठित किया गया। इसके बाद पहली बार 2009 में यहां लोकसभा चुनाव के लिए मतदान हुआ। सांस्कृतिक रूप से यह क्षेत्र काफी समृद्ध है। यह इलाका नेपाल से अपनी सीमा को बांटता है। सुपौल प्राचीन काल में मिथिला राज्य का हिस्सा था। बाद में मगध तथा मुगल सम्राटों ने भी राज किया। पर्यटन स्थलों में गणपतगंज का विष्णु मंदिर, धरहारा का महादेव मंदिर, वीरपुर में कोसी बैराज, हुलास का दुर्गा महादेव मंदिर आदि प्रमुख हैं। सुपौल बिहार की एक हाईप्रोफाइल लोकसभा सीट है. सुपौल सहरसा जिले से 14 मार्च 1991 को विभाजित होकर अलग जिले के रूप में अस्तित्व में आया. सहरसा फारबिसगंज रेलखंड पर स्थित है सुपौल. सांस्कृतिक रूप से यह काफी समृद्ध जिला है. नेपाल से करीब होने के कारण यह सामरिक रूप से भी काफी महत्त्वपूर्ण है. क्षेत्रफल के आधार पर यह कोसी प्रमंडल का सबसे बड़ा जिला है. वीरपुर, त्रिवेणीगंज, निर्मली, सुपौल इसके अनुमंडल हैं. लोकगायिका शारदा सिन्हा एवं स्व. पंडित ललित नारायण मिश्र इसी इलाके से आते हैं. सुपौल प्राचीन काल में मिथिला राज्य का हिस्सा था. बाद में मगध तथा मुगल सम्राटों ने भी यहां राज किया. सुपौल को 1991 में जिला बनाया गया. परिसीमन के बाद 2008 में सुपौल लोकसभा सीट अलग से अस्तित्व में आई. 2009 के चुनाव में यहां से जेडीयू के विश्व मोहन कुमार सांसद बने. 2009 के चुनाव में रंजीत रंजन ने सुपौल सीट से अपनी किस्मत आजमाई थीं. लेकिन तब रंजीत रंजन जेडीयू के विश्व मोहन कुमार से डेढ लाख वोटों से हार गई थीं. लेकिन 2014 का चुनाव रंजीत रंजन ने कांग्रेस के टिकट पर सुपौल सीट से लड़ा. मोदी लहर के बावजूद इस बार रंजीत रंजन ने 60000 वोटों से जेडीयू के उम्मीदवार

दिलेश्वर कमैत को हराकर जीत हासिल की थी. सुपौल उत्तर में नेपाल, दक्षिण में मधेपुरा, पश्चिम में मधुबनी और पूर्व में अररिया जिले से घिरा हुआ है. यह इलाका कोसी नदी के पानी से हर साल आने वाले बाढ़ से प्रभावित होता रहता है. इस इलाके में बाढ़ और रोजगार के लिए पलायन सबसे बड़ी समस्या है. इस संसदीय क्षेत्र में वोटरों की संख्या 1,279,549 है. जिसमें से 672,904 पुरुष वोटर और 606,645 महिला वोटर हैं. बिहार में 5 लोकसभा सीटों पर 13 मई को वोटिंग कराई गई. बिहार में इस चरण में 57.06 फीसदी वोट पड़े जो 2019 की तुलना में कम है. तब बिहार में इन सीटों पर 59.31 फीसदी वोट पड़े थे. समस्तीपुर सीट पर इस बार 58.10 फीसदी वोट पड़े हैं. पिछले चुनाव में 60 फीसदी से अधिक वोट डाले गए थे. समस्तीपुर संसदीय सीट पर इस बार मुकाबला मुख्य रूप से दो नए युवा उम्मीदवारों के बीच है. कांग्रेस ने सनी हजारी तो लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की शांभवी चौधरी के बीच मुकाबला है. सनी हजारी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड के वरिष्ठ नेता महेश्वर हजारी के पुत्र हैं तो वहीं शांभवी चौधरी जनता दल यूनाइटेड के नेता और मंत्री अशोक चौधरी की बेटी हैं।

★ **समस्तीपुर** :- समस्तीपुर जिला कृषि और उद्योग के लिए जाना जाता है. यहीं पर डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय है, जिसकी गिनती देश के नामी कृषि यूनिवर्सिटी में होती है. कभी समस्तीपुर लोकसभा सीट पर कांग्रेस का दबदबा हुआ करता था. लेकिन पिछले कुछ चुनावों से इस सीट पर एनडीए उम्मीदवार ही जीतते आए हैं. 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए के सहयोगी लोजपा के टिकट पर रामचन्द्र पासवान चुनाव लड़े थे और लगातार दूसरी जीत हासिल की थी. 2019 के चुनाव में रामचन्द्र पासवान को 562,443 वोट मिले थे. वहीं दूसरे नंबर पर कांग्रेस के अशोक कुमार रहे थे. अशोक को 310,800 वोट मिले थे. वहीं तीसरे नंबर पर वाजिब अधिकार पार्टी के अजय कुमार थे, इन्हें 27,577 वोट मिले थे. वहीं निर्दलीय उम्मीदवार ममता कुमारी 23,590 वोटों के साथ चौथे नंबर रही थीं. इस चुनाव में रामचंद्र पासवान को हर लोकसभा क्षेत्र में बढ़त मिली थी. हालांकि, चुनाव जीतने के कुछ महीनों बाद ही रामचन्द्र पासवान की मृत्यु हो गई. इसके बाद उपचुनाव में इनके बेटे प्रिंसराज चुनावी मैदान में उतरे थे. प्रिंसराज ने एक बार फिर से कांग्रेस प्रत्याशी अशोक राम को चुनाव में पटखनी दी. समस्तीपुर लोकसभा सीट एससी उम्मीदवारों के लिए सुरक्षित सीट है. समस्तीपुर लोकसभा सीट के अंतर्गत छह विधानसभा सीटें आती हैं, जिनमें समस्तीपुर, कल्याणपुर, वारिसनगर, रोसड़ा, कुशेश्वर स्थान और हायाघाट हैं. कुशेश्वर स्थान और हायाघाट दरभंगा जिले का हिस्सा है. समस्तीपुर लोकसभा सीट पहले सामान्य सीट ही थी, लेकिन 2009 के परिसीमन के बाद यह सीट एससी उम्मीदवारों के लिए सुरक्षित हो गई.

☞ **क्या है जातीय समीकरण** :- समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र में कुशवाहा और यादव जाति के लोग अधिक हैं. इसके अलावा अनुसचित जाति की आबादी भी अधिक है. सामान्य और ओबीसी समुदाय के वोटर्स भी निर्णायक भूमिका में रहते हैं. यहां के मुस्लिम वोटर्स की संख्या भी अच्छी खासी तादाद में है. 2019 के चुनाव में 12 प्रत्याशी चुनावी मैदान में थे. लेकिन सबको पटखनी देते हुए लोजपा के रामचन्द्र पासवान ने विजय पताका लहराया था. समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र में 2019 के लोकसभा चुनाव में समस्तीपुर लोकसभा सीट पर कुल 1679030 मतदाता थे, जिन्होंने LJP प्रत्याशी रामचंद्र पासवान को 562443 वोट देकर जिताया था. उधर, INC उम्मीदवार डॉ अशोक कुमार को 310800 वोट हासिल हो सके थे, और वह 251643 वोटों से हार गए थे।

☞ **समस्तीपुर संसदीय सीट, जो अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है** :- इससे पहले, समस्तीपुर लोकसभा सीट पर वर्ष 2014 में हुए आम चुनाव के दौरान 1504451 मतदाता दर्ज थे. उस चुनाव में LJP पार्टी के प्रत्याशी रामचंद्र पासवान ने कुल 270401 वोट हासिल कर जीत दर्ज की थी. उन्हें लोकसभा क्षेत्र के कुल मतदाताओं में से 17.97 प्रतिशत ने समर्थन दिया था, और उन्हें उस चुनाव में डाले गए वोटों में से 31.33 प्रतिशत वोट मिले थे. उधर, दूसरे स्थान पर रहे थे INC पार्टी

के उम्मीदवार डॉ. अशोक कुमार, जिन्हें 263529 मतदाताओं का समर्थन हासिल हो सका था, जो लोकसभा सीट के कुल वोटरों का 17.52 प्रतिशत था और कुल वोटों का 30. 53 प्रतिशत रहा था. लोकसभा चुनाव 2014 में इस संसदीय सीट पर जीत का अंतर 6872 रहा था. उससे भी पहले, बिहार राज्य की समस्तीपुर संसदीय सीट पर वर्ष 2009 में हुए लोकसभा चुनाव के दौरान 1312948 मतदाता मौजूद थे, जिनमें से JDU उम्मीदवार महेश्ध्वर हजारी ने 259458 वोट पाकर जीत हासिल की थी. महेश्वर हजारी को लोकसभा क्षेत्र के कुल मतदाताओं में से 19.76 प्रतिशत वोटरों का समर्थन हासिल हुआ था, जबकि चुनाव में डाले गए वोटों में से 44.37 प्रतिशत वोट उन्हें मिले थे. दूसरी तरफ, उस चुनाव में दूसरे स्थान पर LJP पार्टी के उम्मीदवार रामचंद्र पासवान रहे थे, जिन्हें 155082 मतदाताओं का साथ मिल सका था. यह लोकसभा सीट के कुल वोटरों का 11.81 प्रतिशत था और कुल वोटों का 26.52 प्रतिशत था. लोकसभा चुनाव 2009 में इस संसदीय सीट पर जीत का अंतर 104376 रहा था

★ **चौथा चरण चुनाव :-**

☞ **दरभंगा :-** दरभंगा लोकसभा क्षेत्र की पहचान पान, मखाना, मछली और आतिथ्य सत्कार के लिए है। यह मिथिलांचल का केंद्र है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। दरभंगा का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है और यह कई महान राजवंशों और शासकों का घर रहा है। दरभंगा महाराज: दरभंगा महाराज को भारत का सबसे बड़ा जमींदार कहा जाता था। उन्होंने जनकल्याण में कई कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, तिरहुत रेलवे, अशोक पेपर मिल आदि की स्थापना कराई। दरभंगा मिथिलांचल का केंद्र है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। दरभंगा का रामायण से गहरा संबंध है। माना जाता है कि यहीं पर सीता का जन्म हुआ था। दरभंगा एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र भी है। कई प्रसिद्ध राजनेता, जैसे कि कीर्ति आजाद और अली अशरफ फातमी, दरभंगा से सांसद रहे हैं।

☞ **दरभंगा लोकसभा क्षेत्र में छह विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं :-** दरभंगा शहरी, दरभंगा ग्रामीण, बेनीपुर, अलीनगर, गौराबौराम और बहादुरपुर। ☞ **जनसंख्या :-** दरभंगा की जनसंख्या लगभग 39 लाख 21 हजार 971 है।

☞ **साक्षरता दर :-** दरभंगा की औसत साक्षरता दर 44.32 फीसद है।

☞ **मतदाताओं की संख्या :-** दरभंगा में लगभग 16 लाख 20 हजार 514 मतदाता हैं।

☞ **विकास और मुद्दे :-** दरभंगा में कई विकासात्मक पहल हुई हैं, जैसे कि दरभंगा एयरपोर्ट का विकास, एम्स की स्थापना और बीपीओ सेंटर खोलना। हालांकि, बाढ़, जल संकट, और तारामंडल के निर्माण की अध ूरी योजना जैसे मुद्दे भी मौजूद हैं।

☞ **दरभंगा की खास बातें :-** दरभंगा कई महान विद्वानों का जन्मस्थान रहा है, जिनमें कुमारिल भट्ट, मंडन मिश्र, गदाधर पंडित, शंकर, वाचास्पति मिश्र, विद्यापति, नागार्जुन आदि शामिल हैं। यह क्षेत्र आम और मखाना के उत्पादन के लिए भी प्रसिद्ध है। दरभंगा एक समृद्ध इतिहास और संस्कृति वाला एक महत्वपूर्ण शहर है। यह विकास और प्रगति की ओर अग्रसर है, और यह निश्चित रूप से भविष्य में एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरेगा। इस लोकसभा सीट पर कुल 17 लाख 74 हजार 656 मतदाता हैं। जिसमें पुरुष मतदाता की संख्या 9 लाख 33 हजार 122 है। वहीं महिला मतदाता की संख्या 8 लाख 41 हजार 499 है। कुल मतदाता में 35 थर्ड जेंडर हैं। यहां कुल 1785 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इस लोकसभा में कुल 6 विधानसभा का इलाका दरभंगा नगर, दरभंगा ग्रामीण, गौरबौराम, बहादुरपुर, अलीनगर, बेनीपुर है। 5 विधानसभा में एनडीए के विधायक हैं। इसमें एनडीए गठबंध न से भाजपा की उम्मीदवार गोपाल जी ठाकुर और इंडिया गठबंधन से राजद उम्मीदवार ललित कुमार यादव के बीच सीधी टक्कर है। गोपालजी ठाकुर 2010 में बेनीपुर विधानसभा से विधायक बने। हालांकि, 2015 में चुनाव हार गए। इसके बाद पार्टी ने उन्हें 2019 में लोकसभा का टिकट दिया। 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए उम्मीदवार गोपाल जी ठाकुर को कुल 5,86,668 मत प्राप्त हुआ था उन्होंने अब्दुल बारी सिद्दीकी (राजद) को 267,979 मतों से पराजित किया था।

☞ **6 बार विधायक रह चुके हैं ललित यादव :-** ललित यादव ने

भी अपनी राजनीति की शुरुआत राजद से की वह दरभंगा ग्रामीण से लगातार 6 बार के विधायक हैं। वर्ष 2024 के दरभंगा लोकसभा चुनाव में राजद के टिकट पर किस्मत आजमा रहे ललित यादव पहले प्रतिनिधि हैं। जिन्होंने लगातार दरभंगा ग्रामीण क्षेत्र से 6 बार जीत हासिल की है। वर्ष 1995 में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के समय ललित कुमार यादव पहली बार विधायक बने थे। तथा 2022 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के मंत्रीमंडल में उन्हें लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के मंत्री रहे।

☞ **कीर्ति आजाद दो बार रहे सांसद :-** दरभंगा लोकसभा सीट 1999 में पहली बार यहां से भाजपा ने जीत दर्ज की, और कीर्ति आजाद यहां से सांसद बने। इसके बाद 2004 को छोड़ दिया जाए तो 2009 और 2014 में भी भाजपा ने यहां से जीत दर्ज की और कीर्ति आजाद लगातार यहां से सांसद रहे। 1996 और 1998 में सांसद रहे अली असरफ फातमी ने 2004 में कीर्ति आजाद को मात दी थी। इसके बाद केंद्र सरकार में वह राज्य प्रभार के मानव संसाधन विकास विभाग के मंत्री भी रहे। 1999 से पहले दरभंगा लोकसभा सीट कांग्रेस और राजद का गढ़ माना जाता रहा है। जानकारी होगी 2019 के लोकसभा चुनाव में इस लोकसभा सीट से 20 हजार से अधिक लोगों ने नोटा का इस्तेमाल किया था।

★ **उजियारपुर :-** उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र से केंद्रीय गृहराज्य मंत्री और बीजेपी उम्मीदवार नित्यानंद राय का बिहार सरकार के पूर्व मंत्री आरजेडी उम्मीदवार आलोक कुमार मेहता से सीधा मुकाबला है। नित्यानंद राय को तीसरी दफा सफलता पाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। वहीं इनको रोकने के लिए तीसरी दफा राजद के आलोक कुमार मेहता भी संघर्ष कर रहे है। सब्जी उत्पादन का मुख्य केंद्र के रूप में चर्चित उजियारपुर संसदीय क्षेत्र के करीब 16 लाख मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग करेंगे। उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र 2009 परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया था। 2009 परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र पर एनडीए का कब्जा है। जेडीयू की अश्वमेघ देवी राजद के आलोक मेहता को 25 हजार से ज्यादा मतों से पराजित कर पहली सांसद बनी थी। 2014 में भाजपा के नित्यानंद राय ने कमल खिलाया था। इन्हें 3 लाख 17 हजार से अधिक मत मिले थे। राजद के उम्मीदवार आलोक कुमार मेहता को 2 लाख 56 हजार से अधिक मत हासिल हुए थे। ये साठ हजार से अधिक मतों से शिकस्त खा गए थे। 2019 चुनाव में नित्यानंद राय को जीत के अंतर में इजाफा मिला। 2 लाख 77 हजार से ज्यादा मतों से इनकी जीत हुई। इनके सामने रालोसपा प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा थे। इन्हें 2 लाख 66 हजार से अधिक मत प्राप्त हुए थे। जबकि बीजेपी उम्मीदवार नित्यानंद राय को 5 लाख 43 हजार से ज्यादा मत मिले। और जीत हासिल कर केंद्र में गृह राज्यमंत्री बने। इस बार उपेंद्र कुशवाहा राजग के साथ है और काराकाट संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे है।

☞ **नित्यानंद राय को अपना खास दोस्त बता चुके हैं गृहमंत्री अमित शाह :-** नित्यानंद राय की जीत के लिए इसी महीने गृहमंत्री अमित शाह अपील कर गए है। भाजपा, जेडीयू और लोजपा (रा) के नेता कमल तीसरी दफा खिलाने के लिए जोर लगा रहे है। वहीं राजद उम्मीदवार के लिए तेजस्वी और वीआईपी प्रमुख मुकेश साहनी आ चुके है। लेकिन खास बात कि गृहमंत्री अमित शाह ने नित्यानंद राय को अपना खास दोस्त बता गए है। इस संसदीय क्षेत्र में हाजीपुर-बछबाड़ा चार लेन वाली सड़क निर्माणाधीन है। सरायगंज में मेडिकल कालेज बनना बड़ा काम लगता

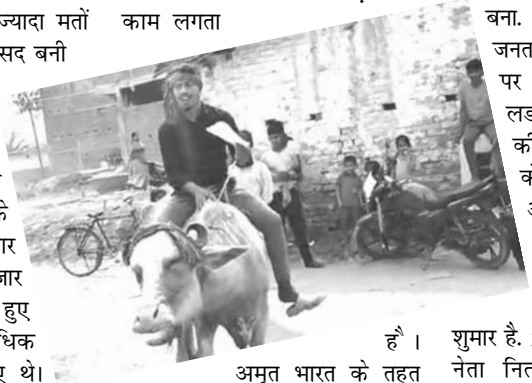

है।

अमृत भारत के तहत दलसिंहसराय, शाहपुर पटोरी रेलवे स्टेशन का जीर्णोद्धार दिखता है। दलित टोला के बिजन पासवान बताते है कि टोले को सड़क से जोड़ना और प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिलना उपलब्धि है। वहीं पांच किलो मुफ्त अनाज भी महिला मतदाताओं के बीच मायने रखती है। लेकिन राजद की जिलाध्यक्ष रोमा भारती इन उपलब्धियों को नकारती है। उजियारपुर सीट पर इस बार 56.00 फीसदी वोट पड़े हैं. जबकि पिछले चुनाव में इस क्षेत्र में 60.15 वोट डाले गए थे. उजियारपुर लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय तीसरी बार जीत के लिए मैदान में उतरे हैं और उनका मुकाबला राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के वरिष्ठ नेता और पूर्व राज्य मंत्री आलोक मेहता से है. बिहार में 40 लोकसभा सीटें हैं, इनमें उजियारपुर सीट राज्य की हॉट सीटों में एक मानी जाती है. भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता नित्यानंद राय इस सीट पर लोकसभा चुनाव में लगातार दो बार जीत हासिल कर चुके हैं. उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र समस्तीपुर जिले के अंतर्गत आता है. 2008 में परिसीमन हुआ तो उजियारपुर अलग लोकसभा क्षेत्र बना. साल 2009 में यहां पर जनता दल यूनाइटेड के टिकट पर अश्वमेध देवी ने चुनाव लड़ा था और जीत हासिल की थी. लेकिन इसके बाद के अगले दो चुनाव 2014 और 2019 बीजेपी नेता नित्यानंद राय जीते.। उजियारपुर लोकसभा सीट बिहार के हॉट सीटों में शुमार है. 2019 में बीजेपी के दिग्गज नेता नित्यानंद राय के खिलाफ रालोसपा के टिकट पर उपेंद्र कुशवाहा चुनाव लड़े. लेकिन उन्हें जीत नसीब नहीं हुई. उपेंद्र कुशवाहा को नित्यानंद राय ने 2.77 लाख वोटों के अंतर से चुनाव में पटखनी दी थी. तीसरे नंबर पर सीपीआईएम उम्मीदवार अजय कुमार रहे थे. इस चुनाव में नित्यानंद राय को लगभग 5,43,906 वोट मिले थे. वहीं उपेंद्र कुशवाहा को 2,66,628 वोटों की प्राप्ति हुई थी. सीपीआईएम उम्मीदवार अजय कुमार को 27,577 वोट मिले थे. इस सीट पर कुल 18 उम्मीदवार चुनावी मैदान में थे. जातीय समीकरण की बात करें तो उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र

कुशवाहा और यादव जाति के मतदाताओं की संख्या अधिक है. इसलिए हर पार्टियां इन दोनों जातियों को अपने पाले में करने की कोशिशों में जुटी हुई रहती हैं. इसके अलावा ब्राह्मण, मुस्लिम और ओबीसी समुदाय के वोटर्स भी हर चुनाव में निर्णायक भूमिका में रहते हैं. पिछला चुनाव भी काफी रोचक रहा था. नित्यानंद राय खुद यादव समाज से आते हैं. इसलिए पिछले चुनाव में यादव वोटर्स का तो साथ उनको मिला ही, साथ ही ब्राह्मण और ओबीसी समुदाय का ज्यादातर वोट उन्हें ही प्राप्त हुआ. हालांकि, ऐसा कहा जाता है कि इस चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवारों ने उपेंद्र कुशवाहा का खेल बिगाड़ा और उन्हें करारी हार झेलनी पड़ी थी.

☞ **बेगूसराय :-** बेगूसराय में बीजेपी के गिरिराज सिंह के सामने सीपीआई नेता अवधेश कुमार राय हैं। इसलिए सीपीआई प्रत्याशी अवधेश राय को यादव और मुसलमान का सॉलिड वोट जाता दिख रहा है। अतिपिछड़ा वोट चुप्पा वोट है। ये जिधर जाएगा, जीत का कारण बन जाएगा। लोग बताते हैं कि गिरिराज सिंह को बेगूसराय शहर का वोट जा रहा है, लेकिन गांव में सीपीआई की पकड़ मजबूत है। यादव, मुसलमान के अलावा कोयरी-कुर्मी का वोट भी इसे जा रहा है। गिरिराज सिंह मुसलमानों पर बयान देकर हिंदू-मुस्लिम का चुनाव करना चाहते हैं, लेकिन लड़ाई भूमिहार और यादव यानी अगड़ी जाति वर्सेज पिछड़ी जाति की होती जा रही है। गिरिराज सिंह के खिलाफ एंटी इनकम्बेंसी है। यहां से आरएसएस के प्रचारक और बीजेपी के राज्य सभा सदस्य राकेश सिन्हा को टिकट देने की चर्चा थी, लेकिन गिरिराज सिंह टिकट पाने में कामयाब रहे। जानकारी है कि राकेश सिन्हा को बीजेपी ने बेगूसराय जाने से मना कर दिया है। मतलब यह कि इसको लेकर बीजेपी के अंदर तनाव की स्थिति रही। पॉलिटिकल एक्सपर्ट मानते हैं बेगूसराय में मोदी जरूरी, गिरिराज मजबूरी वाली स्थिति है। सीपीआई के प्रत्याशी अवधेश कुमार राय कहते हैं कि बेगूसराय में कई चीजों की आवश्यकता है। सरकार का आश्वासन यहां फेल है। 10 साल में बेगूसराय का विकास जीरो है। दिनकर विश्वविद्यालय पेंडिंग है। मेडिकल कॉलेज बनाने की चर्चा कई बार नेताओं ने की पर नहीं बना। कांवर झील बड़ा पक्षी अभ्यारण्य बन सकता है, पर प्रबंधन के अभाव में यह सूख रहा है। बेगूसराय लोकसभा सीट से बीजेपी के टिकट पर एक बार फिर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह चुनाव लड़ रहे हैं। उनका मुकाबला महागठबंधन की ओर से भाकपा के उम्मीदवार अवधेश राय से है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बेगूसराय सीट तब जबरदस्त चर्चा में आई थी, जब यहां से जेएनयू छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार भाकपा के टिकट पर चुनाव लड़े थे। तब गिरिराज सिंह ने चार लाख से अधिक वोटों के अंतर से जीत दर्ज की थी। बेगूसराय लोकसभा क्षेत्र में लोगों से बातचीत के दौरान जनता का कहना है कि यहां विकास नहीं हुआ है। कई लोग बातचीत के दौरान केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह से नाराज दिखाई देते हैं। लोगों का कहना है कि जिन कामों को गिरिराज सिंह अपनी उपलब्धि बता रहे हैं, ये काम पिछले सांसद के कार्यकाल में स्वीकृत हो गए थे और अब उन पर काम चल रहा है। लोगों का कहना है कि गिरिराज सिंह इन कामों को अपनी निजी उपलब्धि बता रहे हैं लेकिन इसमें उनकी निजी उपलब्धि जैसा कुछ नहीं है। बेगूसराय के लोगों का कहना है कि यहां का चुनाव कभी भी हिंदू-मुसलमान के मुद्दे पर नहीं हुआ। लोग कहते हैं कि यह 36 लाख की आबादी के भविष्य का चुनाव है। लोकसभा चुनाव में प्रचार के दौरान बेगूसराय में विश्वविद्यालय बनाने की मांग लगातार उठ रही है। यहां लगभग 1 लाख बच्चे हैं, जिन्हें पढ़ाई के लिए दरभंगा जाना पड़ता है। इसलिए चुनाव प्रचार के दौरान लोगों की ओर से बेगूसराय में विश्वविद्यालय बनाने की मांग को प्रमुखता से उठाया जा रहा है। पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव यह घोषणा कर चुके हैं कि अगर इंडिया गठबंधन की सरकार बनी तो बेगूसराय में विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी। इसके अलावा बेगूसराय जिले में मेडिकल कॉलेज और एयरपोर्ट की मांग बनाने की मांग भी उठ रही है।बेगूसराय सीट पहले वामपंथियों का गढ़ मानी जाती थी लेकिन पिछले दो लोकसभा चुनाव में यहां लाल रंग के बजाय भगवा रंग चढ़ा है। यानी बीजेपी को जीत मिली है। इस बार कन्हैया कुमार उत्तरी-पूर्वी दिल्ली सीट से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं।प्रखंड को मुख्यालय से जोड़ने का मामला काफी दिनों से

लटका रहा। हवाई हड्डा को डेवलप नहीं किया गया। सभी ट्रेनों का ठहराव नहीं है। यहां नदियों का जाल है पर ये नदियां सूख रही हैं। सिंचाई के लिए जल का संचय ठीक से नहीं हो रहा है.

बिहार में लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में पांच सीटों-दरभंगा, उजियारपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय और मुंगेर संसदीय क्षेत्रों में वोटिंग समाप्त हो गयी हैं . बता दें कि इन पांचों सीट पर 55 प्रत्याशी इपनी किस्मत आजमा रहे थे इन प्रत्याशियों में बीएसपी के पांच, कांग्रेस के एक, राजद के तीन, जदयू के एक भाजपा के तीन और लोजपा (रामविलास) के एक प्रत्याशी हैं. इनके अतिरिक्त 21 निर्दलीय, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पार्टी के 14 प्रत्याशी एवं 20 गैर मान्यता प्राप्त रजिस्टर्ड राजनीतिक दलों के प्रत्याशी मैदान में हैं. बिहार में चौथे चरण के इस चुनाव की खास बात यह है कि इस चरण में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय की प्रतिष्ठा भी दांव पर है. इसी चरण में जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह की साख मुंगेर में दांव पर लगी हुई है. इनके अतिरिक्त दरभंगा सांसद गोपाल जी ठाकुर, मनीगाछी विधायक ललित यादव का दरभंगा संसदीय सीट पर कड़ा मुकाबला माना जा रहा है. वहीं, बिहार सरकार के मंत्री अशोक चौधरी की बेटी शांभवी चौधरी और नीतीश सरकार के ही दूसरे मंत्री महेश्वर हजारी के बेटे सनी हजारी के बीच भी दिलचस्प लड़ाई है. इनके अतरिक्त पूर्व मंत्री तथा राजद विधायक आलोक मेहता की प्रतिष्ठा भी दांव पर है. बता दें कि पांचों सीटों पर कुल 95 लाख 83 हजार 662 मतदाता जिनमें 50 लाख 49 हजार 656 पुरुष और 45 लाख 33 हजार 813 महिला वोटर हैं,

जबकि थर्ड जेंडर के 193 वोटर्स हैं. इनमें 100 साल से ज्यादा के 2814 वोटर्स हैं तो एक लाख 51 हजार 482 वोटर्स पहली बार वोट करेंगे. पांचों सीटों पर मात्र एक एनआरआई वोटर है. 92 हजार 313 दिव्यांग वोटर्स के लिए भी इंतजाम किए गए हैं. चौथे फेज की पांच सीटों के लिए कुल 9447 मतदान केंद्र बनाए गए हैं. इनमें शहरी क्षेत्र में 1532 और ग्रामीण इलाकों में 7915 मतदान केंद्र हैं. 32 पिंक बूथ था जहां सिर्फ महिला मतदानकर्मी और सुरक्षाकर्मी तैनात रहेंगे. 43 मॉडल बूथ बनाए गए हैं. तीसरे चरण तुलना में इस बार मतदान का प्रतिशत कम रहा। हालांकि, 2019 में हुए इन पांचों सीटों पर हुए मतदान से तुलना करें तो इस बार करीब 2.33 प्रतिशत कम मतदान हुआ। पिछली बार 59. 20 प्रतिशत मतदान हुआ था। इस बार 56.85 प्रतिशत हुआ। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी एचआर श्रीनिवास के अनुसार, सबसे अधिक फिर से बेगूसराय में 58.40 प्रतिशत मतदान हुआ है। सबसे कम मुंगेर में 55.00 प्रतिशत मतदान हुआ। वहीं दरभंगा में 56.63 प्रतिशत, समस्तीपुर में 58.10 प्रतिशत और उजियारपुर में 56.00 प्रतिशत मतदान हुआ है। कुछ 56.85 प्रतिशत मतदान हुआ। पिछली बार यानी 2019 के लोकसभा चुनाव में कुल मतदान का प्रतिशत 59.20 था.

★ **मुंगेर** :- मुंगेर में एनडीए प्रत्याशी ललन सिंह जहां भी जा रहे हैं इस बात की ताकीद जरूर कर रहे हैं। उनके इस बयान के कई मायने निकाले जा रहे हैं। लालू प्रसाद यादव ने जब बिना मुहूर्त के अशोक महतो की चट शादी करा उनकी पत्नी को पट मुंगेर का टिकट दे दिया था, तब इस बात की चर्चा तेज थी कि लालू ने ललन सिंह के खिलाफ कमजोर कैंडिडेट दिया है। चुनाव आते-आते अब पटना, लखीसराय और मुंगेर जैसे सवर्ण बहुल तीन जिलों में फैले मुंगेर लोकसभा क्षेत्र में लड़ाई पूरी तरह अगड़ा-वर्सेज पिछड़ा पर आ टिकी है। लोग यह कहते हुए आसानी से मिल जाते हैं कि जंग वही जीत पाएगा जो अपनी जातियों की किलेबंदी करने में सफल रहेगा। क्या लालू यादव मुंगेर में अगड़ा वर्सेज पिछड़ा कराने की अपनी मंसा में सफल रहे ? क्या अशोक महतो ने ललन सिंह की मुसीबत बढ़ा दी है? क्या नीतीश कुमार और ललन सिंह से नाराज भूमिहार चुनाव में ललन सिंह का साथ दे रहे हैं? क्या अनंत सिंह अपनी पुरानी अदावत भूलकर ललन सिंह को विजयी बनाने के लिए मैदान में हैं, क्या अनंत सिंह का लाभ ललन सिंह को मिल रहा है? भूमिहारों में नीतीश कुमार और ललन सिंह के प्रति नाराजगी ललन सिंह की सबसे बड़ी चुनौती अपनी ही बिरादरी भूमिहारों की नाराजगी दूर करने की है। उनके व्यवहार के कारण भूमिहारों का एक बड़ा वर्ग उनसे नाराज है। उनका आरोप है कि अपनी जाति से अपना सांसद होने के बाद भी वे उन तक आसानी से अपनी समस्या तक नहीं पहुंचा पाते हैं। इलाके की कई समस्याएं है जिनका समाधान नहीं हो पाया है। मोकामा में जहां टाल तो बड़हिया में ट्रेनों के ठहराव को लेकर लोग नाराजगी दर्ज कराते हुए मिल जाते हैं।

☞ **ललन-नीतीश से नाराजगी के बीच जातीय किलेबंदी की लड़ाई** :- ललन सिंह की सबसे

बड़ी चुनौती अपनी ही बिरादरी भूमिहारों की नाराजगी दूर करने की है। उनके व्यवहार के कारण भूमिहारों का एक बड़ा वर्ग उनसे नाराज है। उनका आरोप है कि अपनी जाति से अपना सांसद होने के बाद भी वे उन तक आसानी से अपनी समस्या तक नहीं पहुंचा पाते हैं। इलाके की कई समस्याएं है जिनका समाधान नहीं हो पाया है। मोकामा में जहां टाल तो बड़हिया में ट्रेनों के ठहराव को लेकर लोग नाराजगी दर्ज कराते हुए मिल जाते हैं। ललन सिंह को लेकर भूमिहारों के एक बड़े वर्ग में इस बात की नारजगी है कि वे किसी की सुनते नहीं हैं। भूमिहारों में ललन सिंह से ज्यादा नाराजगी उनकी पार्टी के मुखिया और बिहार के सीएम नीतीश कुमार को लेकर है। बड़ी संख्या में लोग उनका नाम सुनते ही भड़क उठते हैं। ये नाराजगी केवल भूमिहारों तक ही सीमित नहीं है। इलाके का एक बड़ा अतिपिछड़ा वर्ग भी नीतीश कुमार के बार-बार पाला बदलने से नाराज है।

☞ **अनंत सिंह ने डैमेज कंट्रोल कर दूर की भूमिहारों की नाराजगी** :- बीच चुनाव में जब अनंत सिंह को कोर्ट से 15 दिन की पैरोल मिली तो इस बात की चर्चा शुरू हो गई कि मुंगेर की लड़ाई को बाहुबली वर्सेज बाहुबली कराने की कोशिश की गई है, लेकिन यहां कहानी थोड़ी-सी अलग है। नीतीश कुमार से भूमिहारों की नाराजगी की शुरुआत 5 साल पहले अनंत सिंह को जेल भेजने से ही हुई थी। इसमें ललन सिंह की भी एक बड़ी भूमिका सामने आई थी।अब तस्वीर पूरी तरह बदल गई है। अनंत सिंह सारे शिकवे-गिले भूला कर एक बार फिर से ललन सिंह के साथ है। पहले उपचुनाव में अनंत सिंह की पत्नी को जिताने के लिए ललन सिंह ने मशक्कत की, अब ललन सिंह को जिताने के लिए अनंत सिंह ताकत झोंक रहे हैं। अनंत सिंह के इलाके में घूमने के बाद ललन सिंह को सबसे बड़ा लाभ ये मिल रहा है कि मोकामा के जो भूमिहार कशमकश थे, अब वे पूरी तरह ललन सिंह के साथ एक जुट हो गए हैं। मोकामा में लगभग हर कोई ये बात कहते हुए मिल जाते हैं कि विधायक अनंत सिंह के कारण भूमिहारों में फिलहाल ललन सिंह को लेकर नाराजगी नहीं है। अनंत सिंह नहीं होते तो भूमिहारों को दूसरा विकल्प ढूंढना पड़ता। अनंत सिंह के आने से ललन सिंह को फायदा हुआ है। अशोक महतो के कारण ललन

सिंह के साथ लामबंद हो रहे भूमिहार मंत्री गिरिराज सिंह का घर है, डिप्टी सीएम विजय सिन्हा यहां के विधायक हैं। इसके बाद भी कोरोना के दौरान बड़हिया की लाइफ लाइन कही जाने वाली जिन चार ट्रेनों का ठहराव यहां से बंद किया गया था वो आज तक बहाल नहीं हो पाया है। इसी ट्रेन से किसान, व्यापारी व्यापार करते थे। आज सब ठप है इसके बाद भी ये बाभनवाद के नाम पर वोट मांगते हैं। इससे ज्यादा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। लेकिन अभी एक नीम है तो एक करैला है। ऐसे में किसी एक को खाना है तो अपना करैला ही सही है।

☞ **लालू मुंगेर में अगड़ा बनाम पिछड़ा कराने में कामयाब रहे** :- 2008 की परिसीमन के बाद मुंगेर में अब तक तीन चुनाव हुए हैं। यहां तीनों बार भूमिहार ही जीतने में सफल रहे हैं। इसमें दो बार खुद ललन सिंह जीते हैं। एक बार बाहुबली सूरजभान सिंह की पत्नी वीणा देवी जीती हैं। इसके बावजूद लालू प्रसाद यादव ने यहां से अशोक महतो की पत्नी कुमारी अनीता को उम्मीदवार बनाया। लालू की कोशिश मुंगेर में सवर्ण के खिलाफ पिछड़ा को अपने साथ जोड़ना था और वे इसमें काफी हद तक सफल होते हुए

भी दिखाई दे रहे हैं। मुंगेर में यादव और मुस्लिम जहां पूरी तरह लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव के साथ लामबंद हैं। अशोक महतो को उम्मीदवार बनाने के बाद ओबीसी का एक बड़ा वर्ग जो अभी तक नीतीश कुमार का कोर वोट बैंक माना जाता था, वो अब लालू प्रसाद यादव के साथ जुड़ता हुआ दिख रहा है। अशोक महतो की पत्नी जो खुद धानुक जाति से आती हैं, उनके कारण धानुक और कुर्मी में एक बड़ी सेंध मारी होती हुई दिखाई दे रही है। कुर्मी की नाराजगी, टिकट बांटने में नीतीश गलती किए हैं अशोक महतो कुर्मी में अपनी पैठ बनाने में कितना कामयाब रहे हैं, अशोक महतो 17 साल जेल में गुजारने के बाद बाहर आए हैं। वे मूल रूप से नवादा के रहने वाले हैं। शेखपुरा का कुछ इलाका उनका गढ़ रहा है। अचानक पहले सुर्यगढ़ा में शादी और इसके बाद मुंगेर से लोकसभा चुनाव का टिकट। यहां की बड़ी आबादी अभी भी ऐसी है जो उनकी पत्नी अनीता देवी और अशोक महतो की पहचान से अंजान है। जो जानते हैं, उनके सामने अशोक महतो की छवि कुख्यात की है। इसका बड़ा नुकसान अशोक महतो को होता हुआ दिखाई दे रहा है। ललन सिंह के उनके खिलाफ नाराजगी जरूर है लेकिन उनके सामने जो हैं उन्हें तो हम पहचानते तक ही नहीं हैं। पहली बार दोनों का नाम सुना हूं। वे बस लालू यादव के नाम पर यहां चुनाव लड़ रहे हैं। मुंगेर का राजनीतिक इतिहास देखें तो वर्ष 1952, 1957, 1962, 1971 के संसदीय चुनावों में कांग्रेस ने परचम लहराया। लेकिन 1977 के चुनाव में जनता पार्टी ने कांग्रेस के जीत के सिलसिले को रोक दिया। 1980 और 1984 में फिर से कांग्रेस जीती। 1989 में यहांजनता दल की जीत हुई। 1991 में सीपीआई से ब्रह्मानंद मंडल सांसद बने। 1996 में फिर से ब्रह्मानंद मंडल जीते, लेकिन समता पार्टी से। 1998 में एक साल के लिए आरजेडी से विजय कुमार विजय सांसद बने। 2004 में आरजेडी के जयप्रकाश नारायण यादव जीते। 2009 में जेडीयू के ललन सिंह सांसद हुए। 2014 में सूरजभान सिंह की पत्नी एलजेपी से वीणा देवी जीतीं। 2019 में महागठबंधन की कांग्रेस उम्मीदवार और अनंत सिंह की पत्नी नीलम देवी को जेडीयू के ललन सिंह ने हराया और सांसद बने। बाहुबली सूरजभान सिंह की पत्नी वीणा देवी

की जीत की बड़ी वजह नरेन्द्र मोदी लहर थी।

★ पांचवे चरण में सम्पन्न हुए लोकसभा के पांच सीटों पर कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दाव पर :- बिहार में मिथिलांचल की तीन लोकसभा सीटों मधुबनी, झंझारपुर और दरभंगा में झंझारपुर का सियासी इतिहास काफी रोचक रहा है. कोसी और कमला नदी की गोद में बसा झंझारपुर इलाका दरभंगा जिले का हिस्सा है लेकिन अलग जिले की मांग यहां लगातार तेज हो रही है. इसी इलाके से बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्रा जीतकर संसद और बिहार के सीएम की कुर्सी पर विराजमान हुए. वर्तमान में यहां से सांसद हैं भाजपा के बीरेन्द्र कुमार चौधरी. ये इलाका कभी आरजेडी और जेडीयू के नेता रहे देवेंद्र प्रसाद यादव का भी गढ़ रहा है जो पांच बार यहां से चुनकर संसद गए और केंद्र में मंत्री भी बने. यहां के वोटरों ने 2014 में पहली बार भाजपा को जीत दिलाई. सांसद बीरेंद्र कुमार चौधरी से पहले यहां की राजनीति में श्यामनंदन मिश्र, भोगेंद्र झा, जगन्नाथ मिश्रा, धनिक लाल मंडल एवं गौरीशंकर राजहंस जैसे नेता सक्रिय रहे हैं. लेकिन तमाम बड़े नेताओं के प्रतिनिधित्व के बावजूद बेरोजगारी, पलायन और पिछड़ेपन आज भी झंझारपुर का पर्याय है. 1972 में इस सीट के अस्तित्व में आने के बाद हुए चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार जगन्नाथ मिश्रा यहां से जीतकर लोकसभा पहुंचे. 1980 के चुनाव में जनता पार्टी(एस) के धनिक लाल मंडल यहां से चुने गए. 1984 के चुनाव में कांग्रेस के धनिकलाल मंडल को झंझारपुर की जनता ने चुना. इसके बाद 1989 में जनता

दल के टिकट पर देवेंद्र प्रसाद यादव चुनावी मैदान में उतरे और जीत हासिल की. फिर 1991, 1996, 1999 और 2004 के चुनावों में भी उन्हें जीत मिली. पहले के तीन चुनाव देवेंद्र प्रसाद यादव ने जनता दल उम्मीदवार के रूप में जीता. बीच में 1998 के चुनाव में आरजेडी के सुरेंद्र प्रसाद यादव यहां से जीते. 1999 और 2004 के चुनाव में देवेंद्र प्रसाद यादव आरजेडी के टिकट पर लड़े और चुनाव जीता. 2009 के चुनाव में झंझारपुर की जनता ने जेडीयू उम्मीदवार मंगनीलाल मंडल के सिर जीत का सेहरा बांधा. लेकिन 2014 के मोदी लहर में बीजेपी उम्मीदवार बीरेंद्र कुमार चौधरी को यहां का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला.

★ मधुबनी :- मधुबनी बिहार के दरभंगा प्रमंडल का एक प्रमुख शहर और जिला है. दरभंगा और मधुबनी को मिथिला संस्कृति का केंद्र माना जाता है. मैथिली तथा हिंदी यहां की प्रमुख भाषा है. विश्वप्रसिद्ध मिथिला पेंटिंग और मखाना के पैदावार की वजह से मधुबनी को विश्वभर में जाना जाता है. मधुबनी जिला मिथिला पेंटिंग का एक प्रमुख निर्यात केंद्र भी है. दीवार कला, पेपर और कैनवास पर चित्रकला के हालिया विकास की उत्पत्ति मुख्य रूप से मधुबनी के आसपास के गांवों से हुई थीं साथ यहां की कई महिला कलाकारों को पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है जो बिहार राज्य के गौरव को बढ़ाते हैं. 1952 में ये सीट दरभंगा-पूर्व के नाम से जाना जाता था. पहले चुनाव में यहां से कांग्रेस के उम्मीदवार अनिरुद्ध सिन्हा जीते थे. 1971 में कांग्रेस ने इस सीट से जगन्नाथ मिश्रा को उतारा और वे जीतकर संसद पहुंचे. बाद में जगन्नाथ मिश्रा बिहार के मुख्यमंत्री भी बने. 1976 में संसदीय सीटों का परिसीमन हुआ और मधुबनी सीट बनी. जिसमें मधुबनी जिले के पश्चिमी इलाकों को शामिल किया गया. मधुबनी संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,397,256 है. इसमें 755,812 पुरुष वोटर हैं जबकि 641,444 महिला वोटर हैं. मधुबनी संसदीय क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- हरलाखी, बेनीपट्टी, बिस्फी, मधुबनी, केवटी और जाले. 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में इनमें से तीन सीटें आरजेडी, एक बीजेपी, एक कांग्रेस और एक आरएलएसपी ने जीती. 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के अशोक कुमार यादव ने जीत हासिल की, उन्हें 5,95,843 वोट मिले थे, जबकि वीआईपी के बद्री कुमार पुरबे 1,40,903 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और आईएनडी. के डॉ शकील अहमद 1,31,530 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे. मधुबनी लोकसभा सीट के 2014 के चुनाव नतीजों पर गौर करें तो बीजेपी उम्मीदवार हुकुमदेव नारायण यादव को जीत हासिल हुई थी. हुकुमदेव नारायण यादव को 3,58,040 वोट मिले थे. वहीं दूसरे नंबर पर रहे आरजेडी के अब्दुल बारी सिद्दिकी जिन्हें 3,37,505 वोट मिले. मधुबनी लोकसभा सीट पर वोटिंग को लेकर मतदाताओं में खासा उत्साह देखा गया. यहां शाम 6 बजे तक 52.20 फीसदी वोटिंग हुई है.मधुबनी में बेनीपट्टी विधानसभा के बूथ संख्या

52 के प्राथमिक विद्यालय उरैन में लोक गायिका मैथिली ठाकुर ने परिवार संग डाला वोट. इस सीट पर मुख्य मुकाबला भाजपा और राजद के बीच है. बिहार की अधिकतर सीटों की तरह मधुबनी लोकसभा सीट पर भी NDA और महागठबंधन के बीच सीधी टक्कर है. एनडीए ने बीजेपी के मौजूदा सांसद अशोक यादव को फिर से मैदान में हैं तो महागठबंधन की ओर से आरजेडी के अली अशरफ फातमी इस बार चुनौती पेश कर रहे हैं. चुनाव से ठीक पहले फातमी ने जेडीयू को छोड़कर आरजेडी ज्वाइन किया था. 2019 के लोकसभा चुनाव में तो बीजेपी के अशोक यादव ने 4 लाख 54 हजार से अधिक मतों से जीत हासिल की थी. बिहार में सबसे अधिक अंतर से जीत का रिकॉर्ड बनाया था. उनके पिता और बीजेपी नेता हुकुमदेव नारायण यादव के नाम पर मधुबनी से सबसे ज्यादा 5 बार चुनाव जीतने का रिकॉर्ड भी है.

☞ **मधुबनी लोकसभा सीट 2009 से अब तक :-** इस सीट से 2009 में हुए चुनाव में NDA प्रत्याशी के तौर पर बीजेपी के हुकुमदेव नारायण यादव ने आरजेडी के अब्दुल बारी सिद्दीकी को हराया था. 2014 के लोकसभा चुनाव में भी हुकुमदेव नारायण और अब्दुल बारी सिद्दीकी आमने-सामने थे. इस बार भी हुकुमदेव ने मधुबनी में कमल खिलाया. 2019 में बीजेपी ने जीत की हैट्रिक लगाई. इस बार हुकुमदेव नारायण यादव के पुत्र अशोक यादव ने वीआईपी के बद्री कुमार पूर्वे को 4 लाख 54 हजार से अधिक मतों के अंतर से हराया. मधुबनी में अल्पसंख्यक वोटरों की संख्या अच्छी खासी है और यह

निर्णायक भूमिका निभाती है. यही कारण है कि एआइएमआइएम ने इस बार मधुबनी से अपना प्रत्याशी खड़ा किया है. मधुबनी लोकसभा क्षेत्र में तीन विधानसभा क्षेत्र ऐसे हैं जिसमें अल्पसंख्यक मतदाताओं की संख्या अधिक है. विस्फी, केवटी और जाले इन तीनों विधानसभा क्षेत्र में मुस्लिम मतदाताओं की संख्या अच्छी खासी है. यही कारण है कि एआइएमआइएम ने मो. वकार सिद्दीकी को अपना उम्मीदवार बनाया है. इसीलिए यह कहा जा रहा है कि मधुबनी लोकसभा में इस बार कांटे की लड़ाई है. मधुबनी लोकसभा में 6 विधानसभा क्षेत्र आते हैं. जिसमें चार मधुबनी जिले के और दो दरभंगा जिले के विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं. मधुबनी जिला से हरलाखी, बेनीपट्टी, मधुबनी, बिस्फी हैं. केवटी और जाले विधानसभा सीट दरभंगा जिला का हिस्सा है. हरलाखी से जेडीयू के सुधांशु शेखर, मधुबनी से समीर कुमार महासेठ (राजद) विधायक हैं. बांकी चार सीट भाजपा के खाते में हैं. जाले से पूर्व मंत्री जीवेश कुमार, केवटी से मुरारी मोहन झा, बिस्फी से हरिभूषण ठाकुर बचौल और बेनीपट्टी से विनोद नारायण झा विधायक हैं.

☆ **हाजीपुर :-** हाजीपुर बिहार राज्य के वैशाली जिले का मुख्यालय और सबसे बड़ा शहर है. यह बिहार का एक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है. हाजीपुर बिहार का 16वां सबसे अधिक आबादी वाला शहर है, इसके अलावा यह पटना के बाद दूसरा सबसे तेजी से विकसित होने वाला शहर भी है. 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या 1.47 लाख थी. हाजीपुर सीट एससी आरक्षित है. हाजीपुर लोकसभा सीट पर 2014 तक 15 बार संसदीय चुनाव हो चुके हैं, जिनमें से कांग्रेस को 4 बार, कांग्रेस (गठबंधन) को एक बार, जनता पार्टी को 2 बार, जनता दल को 4 बार, जेडीयू को 2 बार और लोक जनशक्ति पार्टी (एलजेपी) को 2 बार जीत मिली है. इस सीट पर बीजेपी और आरजेडी एक बार भी चुनाव नहीं जीत पाई हैं. रामविलास पासवान 2019 लोकसभा चुनाव नहीं लड़े थे, क्योंकि उनकी तबीयत खराब हो गई थी.हाजीपुर संसदीय क्षेत्र में 6 विधानसभा सीटें आती हैं. इनमें

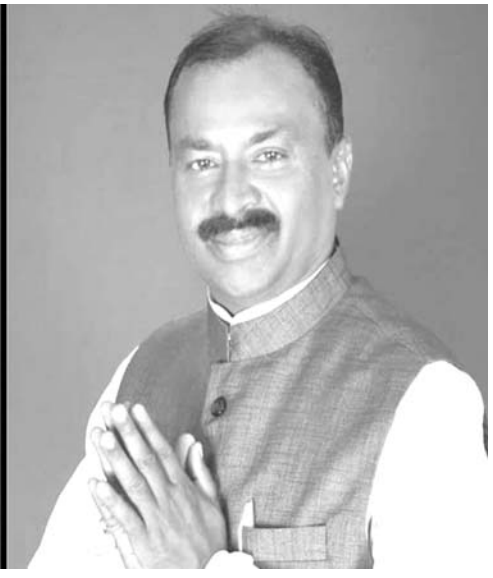

हाजीपुर, लालगंज, महुआ, राजा पाकर, राघोपुर और महनार विधानसभा सीटें शामिल हैं. पटना से सटा हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र कई मायनों में अहम है. इसी क्षेत्र से मौजूदा केंद्रीय खाद्य मंत्री राम विलास पासवान आते हैं. पासवान ने कभी यहां से जीत का रिकॉर्ड कायम किया है. पासवान के साथ एक रिकॉर्ड यह भी है कि वे यहां से 8 बार सांसद रह चुके हैं. रामविलास पासवान को दो बार यहां इतने वोट मिले कि रिकॉर्ड बन गया. इसी सीट पर पहली बार कांग्रेस के उम्मीदवार ने चुनाव जीता था. बीजेपी अभी तक इस सीट पर खाता भी नहीं खोल पाई है. 2019 का जनादेश एलजेपी के पशुपति कुमार पारस 5,41,310 वोटों से जीते आरजेडी के शिवचन्द्र राम 3,35,861 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के दसई चौधरी 4,875 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे2014 का जनादेश एलजेपी के रामविलास पासवान 4,55,652 वोटों से जीते कांग्रेस के संजीव प्रसाद टोनी 2,30,152 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे जेडी(यू) के राम सुन्दर दास 95,790 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

बिहार की हाजीपुर लोकसभा सीट हर चुनाव में सुर्खियों में रही है. यहां कभी कांग्रेस का दबदबा होता था, लेकिन 1977 के चुनाव में पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय रामविलास पासवान ने सेंध लगाई थी. इसके बाद तो रामविलास पासवान और उनके परिवार का ही यहां झंडा लहराया. लेकिन 2019 के चुनाव में स्थिति अलग देखने को मिली. रामविलास पासवान के बेटे चिराग पासवान और चाचा पशुपति पारस के बीच मतभेद दिखे. हालांकि, पिछला चुनाव पशुपति पारस ही जीते थे. 2019 के लोकसभा चुनाव में लोजपा से पशुपति कुमार पारस चुनाव लड़े थे. उन्हें इस चुनाव में जीत मिली थी. पशुपति कुमार पारस को 541,310 वोट मिले थे. वहीं, दूसरे नंबर पर राजद के शिवचन्द्र राम रहे थे. इन्हें 3,35,861 वोटों की प्राप्ति हुई थी.

☞ **क्या है चुनावी इतिहास?** :- हाजीपुर सीट पर कभी कांग्रेस का दबदबा हुआ करता था. साल 1957 के चुनाव में राजेश्वर पटेल ने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा था और जीते थे. वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर 1967 में वाल्मिकी चौधरी ने चुनाव जीता. लेकिन 1977 के चुनाव में रामविलास पासवान ने कांग्रेस के दबदबे को कम करते हुए विजय पताका लहराया. रामविलास पासवान फिर दूसरी बार 1980 में चुनाव लड़े और इस बार भी वहीं जीते. लेकिन 1984 में जब चुनाव हुआ तो उन्हें कांग्रेस उम्मीदवार रामरतन राम ने रामविलास पासवान को हरा दिया. लेकिन 1989 चुनाव में रामविलास पासवान का जादू ऐसा चला कि कांग्रेस के महावीर पासवान बुरी तरह चुनाव हार गए. इस चुनाव को राम विलास पासवान ने 5 लाख 4 हजार वोटों के अंतर से जीता था.

☞ **जानें जातीय समीकरण** :- यह सीट पर हिंदू बहुल है. मुस्लिम 9 प्रतिशत और जैन 3 प्रतिशत हैं. जातीय आधार पर इस क्षेत्र में पासवान और रविदास की संख्या ज्यादा है. इसके अलावा राजपूत, भूमिहार और कुशवाहा समाज के वोटर्स भी हैं. ओबीसी समुदाय के लोग भी अच्छी तादाद में हैं. हर चुनाव में ये निर्णायक भूमिका में रहते हैं.

★ **सारण** :- लोकनायक जय प्रकाश नारायण की जन्मभूमि सारण सीट बिहार की सबसे हाई प्रोफाइल संसदीय सीट मानी जाती है. 2008 के परिसीमन से पहले इसका नाम छपरा था. छपरा शहर सारण जिले का मुख्यालय भी है. ये सीट राजपूतों और यादव समुदाय का गढ़ माना जाता है. चुनावी लड़ाई में इसका असर भी देखने को मिलता है. यादव-मुस्लिम वोटों के समीकरण से यहां से लालू यादव 4 बार सांसद रह चुके हैं. लालू यादव ने अपनी संसदीय पारी की शुरुआत 1977 में यहीं से की थी. उनकी पत्नी राबड़ी देवी भी यहां से चुनाव लड़ चुकी हैं. लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म सारण के सिताब दियारा में हुआ था. कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री दरोगा राय भी सारण के ही रहने वाले थे. दरोगा राय के बेटे चंद्रिका राय परसा विधानसभा सीट से विधायक हैं. उनकी बेटी ऐश्वर्या राय की शादी लालू यादव के बेटे तेजप्रताप से हुई है. गंगा, गंडक एवं घाघरा नदी से घिरा सारण जिला भारत में मानव बसाव के सार्वाधिक प्राचीन केंद्रों में एक है. यह समतल एवं उपजाऊ इलाका है. भोजपुरी यहां की भाषा है. सोनपुर मेला, चिरांद पुरातत्व स्थल यहां की पहचान हैं.

मढौरा का चीनी मील और मर्टन मील बिहार के पुराने उद्योगों के प्रतीक थे. रेल चक्का कारखाना, डीजल रेल इंजन लोकोमोटिव कारखाना, सारण इंजीनियरिंग, रेल कोच फैक्ट्री भी यहां है. हालांकि शिक्षा और रोजगार के लिए बड़े शहरों की ओर पलायन यहां की आम समस्या है. 2008 में सारण नाम से इस सीट का परिसीमन हुआ. 2009 के चुनाव में भी लालू यादव यहां से जीते. चारा घोटाले में सजा हो जाने के बाद लालू के चुनाव लड़ने पर रोक लग गई और 2014 में राबड़ी देवी इस सीट से उतरीं थी. मोदी लहर में आरजेडी के सारे समीकरण फेल हो गए और चुनाव जीतकर फिर राजीव प्रताप रुडी संसद पहुंचे थे. सारण लोकसभा क्षेत्र में वोटरों की कुल तादाद 1,268,338 है. इसमें से 580,605 महिला मतदाता हैं जबकि 687,733 पुरुष मतदाता हैं. सारण संसदीय सीट के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- मढौरा, छपरा, गरखा, अमनौर, परसा और सोनपुर.

☞ **2019 का जनादेश :-** बीजेपी के राजीव प्रताप रूडी 4,99,342 वोट से जीते। आरजेडी के चंद्रिका

राय को 3,60,913 वोट मिले।

☞ **2014 का जनादेश :-** 2014 में सारण सीट से बीजेपी के उम्मीदवार राजीव प्रताप रुडी जीते थे. रुडी ने लालू यादव की पत्नी और बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी को हराया. चारा घोटाले में सजा होने के बाद लालू यादव की सदस्यता छिन जाने के बाद राबड़ी देवी सारण से चुनाव मैदान में उतरी थीं लेकिन मोदी लहर में जीत बीजेपी के हाथ लगी. राजीव प्रताप रुडी को 3,55,120 वोट मिले थे. जबकि राबड़ी देवी को 3,14,172 वोट. जेडीयू के सलीम परवेज 1,07,008 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे थे. बिहार की सारण लोकसभा सीट पर वोटिंग खत्म हो गई है। शाम 6 बजे तक मिली जानकारी के अनुसार पिछले चुनाव से 2% कम, 54.50% मतदान हुआ है। 2019 में यहां 56.48% वोटिंग हुई थी।

एनडीए प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी ने पत्नी और बेटी के साथ अपना वोट कास्ट किया। उन्होंने अमनौर विधानसभा क्षेत्र की बूथ संख्या 12, 13 ,14 को लेकर निवर्तमान सांसद राजीव प्रताप रूडी ने लिखित शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में उन्होंने सारण विकास मंच के संयोजक शैलेंद्र प्रताप सिंह के खिलाफ बूथ कैप्चरिंग जैसे आरोप लगाए हैं। इसके बाद ऑब्जर्वर्स ने मामले की जांच शुरू की है। वोट देने के लिए परिवार संग निकले एनडीए प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी ने कहा कि राजद के कार्यकर्ता और लोग बूथों पर मारपीट कर रहे हैं। पिछड़े, कमजोर खासकर महिलाओं की आवाज दबाने की कोशिश हो रही है। कई बूथों पर निगरानी हुई है और मामला दर्ज किया गया है। इस बार फिर मोदी की सरकार ही आएगी।

सारण लोकसभा क्षेत्र बिहार ही नहीं बल्कि भारत के हॉट सीटों में से एक है। एक तरफ भाजपा से राजीव प्रताप रूडी चुनावी मैदान में है। दूसरी तरफ राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य मैदान में है।

☞ **मुजफ्फरपुर :-** मुजफ्फरपुर उत्तरी बिहार के तिरहुत प्रमंडल का मुख्यालय और मुजफ्फरपुर जिले का प्रमुख शहर है. अपने शाही लीची के लिए यह जिला पूरी दुनिया में जाना जाता है. साहित्यकार देवकी नंदन खत्री, रामबृक्ष बेनीपुरी, जानकी वल्लभ शास्त्री और क्रांतिकारी खुदीराम बोस की यह स्थली रही है. जार्ज फर्नान्डिस और कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद जैसे नेताओं ने मुजफ्फरपुर लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व किया है. 2017 में मुजफ्फरपुर स्मार्ट सिटी के लिए चयनित हुआ. यह जिला ऐतिहासिक रूप से भी काफी समृद्ध है. जैन ध

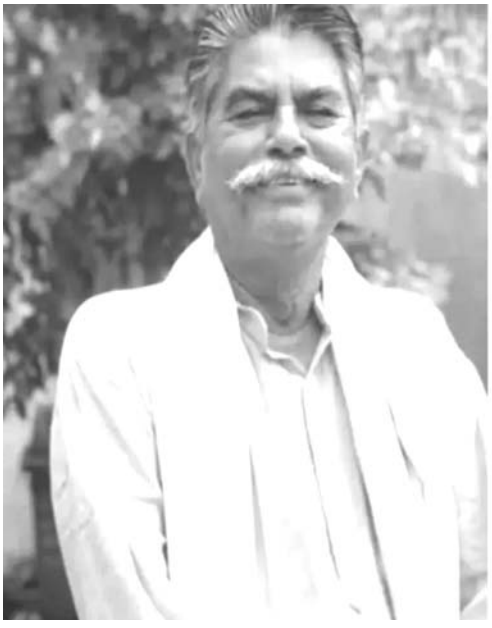

र्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म वैशाली के निकट बसोकुंड में लिच्छवी कुल में हुआ था. यह स्थान जैन धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र है. मुजफ्फरपुर लोकसभा सीट पर 1952 से 1971 तक कांग्रेस जीती थी. 1977, 1980 में जनता पार्टी की जीत हुई थी. 1989, 1991, 1996 में जनता दल ने जीत हासिल की. 1998 में आरजेडी की जीत हुई और 1999, 2004, 2009 में जेडीयू जीती थी. मुजफ्फरपुर संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या है 1,339,949. इनमें से महिला वोटरों की संख्या 622,714 और पुरुष वोटरों की संख्या 717,235 है. मुजफ्फरपुर संसदीय क्षेत्र में विधानसभा की 6 सीटें हैं- गायघाट, औराई, बोचहां, सकरा, कुरहानी और मुजफ्फरपुर. 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के अजय निषाद ने जीत हासिल की, उन्हें 6,66,878 वोट मिले थे. जबकि वीआईपी के राज भूषण चौधरी 2,56,890 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और एआईएफबी के अनिरुद्ध सिंह 2,543 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे. मुजफ्फरपुर लोकसभा सीट पर 2014 में हुए चुनाव में बीजेपी के अजय निषाद जीते थे. अजय निषाद को 4,69,295 वोट मिले थे. दूसरे नंबर पर रहे कांग्रेस के अखिलेश प्रसाद सिंह जिन्हें 2,46,873 वोट मिले थे. जेडीयू के बीजेंद्र चौधरी 85,140 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे. इससे पहले 2009 के चुनाव में कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद ने जेडीयू के टिकट पर यहां से चुनाव जीता था. इस सीट पर वोटरों की संख्या 1,339,949 है.

★ **सिवान लोकसभा क्षेत्र** :- सीवान बिहार राज्य का एक जिला और लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है. सीवान शहर इस जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है. यह जिला 1972 से सारण संभाग का हिस्सा है. राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित सीवान जिला, मूल रूप से सारण जिले का एक उप-मंडल था. 1976 में सारण से अलग होने के बाद सीवान एक पूर्ण विकसित जिला बन गया. इतिहास की माने तो सीवान प्राचीन काल में कोसल साम्राज्य का एक हिस्सा था. 8वीं शताब्दी के दौरान सीवान बनारस साम्राज्य का हिस्सा बना. यहां सिकंदर लोदी ने 15वीं शताब्दी में इस क्षेत्र को अपने राज्य के अधीन कर लिया. बाबर ने अपनी वापसी यात्रा में सीवान के पास घाघरा नदी पार की. 17वीं शताब्दी के अंत तक, डच पहले स्थान पर आए और फिर उसके बाद अंग्रेज यहां आए. 1764 में बक्सर की लड़ाई के बाद, यह बंगाल का हिस्सा बन गया. सीवान ने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. बिहार में पर्दा विरोधी आंदोलन की शुरुआत श्री ब्रज किशोर प्रसाद ने की थी. साथ ही जो 1920 में असहयोग आंदोलन भी शुरु किया था. इसके उत्तर में बिहार का गोपालगंज जिला और पूर्व में बिहार का सारण जिला स्थित है, तो दक्षिण में उत्तर प्रदेश का देवरिया और पश्चिम में बलिया जिला स्थित है. सीवान देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जन्मस्थली भी है. सीवान संसदीय क्षेत्र के तहत 6 विधानसभा सीटें आती हैं- सीवान, जीरादेई, दरौली, रघुनाथपुर, दरौंदा और बरहड़िया. एक समय सीवान पूर्व सांसद जर्नादन तिवारी के नेतृत्व में जनसंघ का गढ़ हुआ करता था, लेकिन साल 1980 के दशक के आखिर में मोहम्मद शहाबुद्दीन के उदय के बाद जिले की सियासी तस्वीर बदल गई. बाहुबली नेता मोहम्मद शहाबुद्दीन 1996 से लगातार चार बार सांसद बने. राजनीति में एमए और पीएचडी करने वाले शहाबुद्दीन ने बाहुबल के जरिए सीवान में अपना दबदबा कायम किया. तब माना गया कि सीवान में नक्सलवाद के बढ़ते प्रभाव के डर से हर वर्ग और जाति के लोगों ने शहाबुद्दीन का समर्थन किया था. हालांकि सीवान के चर्चित तेजाब कांड में शहाबुद्दीन को उम्र कैद की सजा होने के बाद यहां की सियासी तस्वीर में बड़ा बदलाव देखने को मिला. शहाबुद्दीन के जेल जाने के बाद यहां ओमप्रकाश यादव का उभार हुआ. साल 2009 में पहली बार निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में ओमप्रकाश यादव चुनाव जीत गए थे. साल 2014 में ओमप्रकाश यादव बीजेपी के टिकट पर दोबारा जीते थे.

☞ **2019 का जनादेश** :- जद(यू) की कविता सिंह 4,48,473 वोटों से जीतीं। राजद के हेना शहाब 3,31,515 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे सीपीआई(एमएल)एल के अमर नाथ यादव 74,644 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। अगर 2014 के लोकसभा चुनाव की बात करें तो सीवान के सांसद ओमप्रकाश यादव को 3,72,670 वोट मिले थे. उन्होंने राजद की हिना शहाब को 1 लाख 13 हजार वोटों से हराया.

राजद प्रत्याशी हीना शहाब को 2,58,823 वोट मिले थे. वहीं सीपीआई माले के अमरनाथ यादव ने 81 हजार वोट और जेडीयू के मनोज सिंह ने 79,239 वोट हासिल किए. बता दें कि 2014 लोकसभा चुनाव में कुल वोटर्स 15,63,860 वोटर्स थे. इनमें से 8,84,021 वोटर्स वोट देने के लिए मतदान केंद्र तक पहुंचे थे. उत्तर बिहार में सिवान संसदीय क्षेत्र की पहचान देश के पहले राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नाम से होती है, लेकिन समय के साथ इस जिले की पहचान बदल गई। इंटनेशनल चोर नटरवल लाल इसी जिले का था। बाद में शहाबुद्दीन के आतंक से यह जिला हमेशा सुर्खियों में बना रहा। 1995 में जनसंघ के उम्मीदवार पंडित जर्नादन तिवारी को हराकर मो. शहाबुद्दीन राजद से पहली बार सांसद बने। वे लगातार तीन बार सांसद रहे। कानूनी शिकंजा कसने के बाद कोर्ट ने शहाबुद्दीन के चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी। 2009 में ओमप्रकाश यादव ने निर्दलीय चुनाव लड़कर शहाबुद्दीन की पत्नी हिना शहाब को हराकर भाजपा का दामन थाम लिया। इसके बाद 2014 में मोदी लहर में ओमप्रकाश फिर हिना शहाब को हराकर सांसद बने। इसके बाद 2019 में यहां से जदयू की कविता सिंह सांसद बनीं। इस लोकसभा सीट में आठ विधानसभा क्षेत्र हैं। ये हैं- दरौली, जीरादेई, रघुनाथपुर, दरौंदा, महाराजगंज, गोरियाकोठी, बड़रिया और सिवान।

★ **बड़ी घटनाएं :-**

☞ 16 जून 2014 की रात तेजाब कांड के चश्मदीद राजीव रोशन की गोली मारकर हत्या।

☞ 23 नवंबर 2014 की रात सांसद ओमप्रकाश यादव के प्रवक्ता श्रीकांत भारतीय की गोली मारकर हत्या।

☞ 13 मई 2016 को हिंदुस्तान के पत्रकार राजदेव रंजन की गोली मारकर हत्या।

★ **महाराजगंज :-** महाराजगंज बिहार राज्य के 40 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है. 2011 की जनगणना के अनुसार यहां की जनसंख्या 24,282 थी, जिसमें से 12,471 पुरुष और 11,811 महिलाएं हैं. महाराजगंज रेलवे स्टेशन सीवान जंक्शन से जुड़ा हुआ है. यह निर्वाचन क्षेत्र छपरा , पटना, वाराणसी, गोरखपुर और भारत की राजधानी नई दिल्ली से भी जुड़ता है. सारण और सिवान जिले देश में रेल-रोड कनेक्टिविटी के लिहाज से काफी अहम जगह पर स्थित हैं. पूर्वी और पश्चिमी भारत को जोड़ने वाली रेल लाइन हो या फिर दूर दक्षिण के राज्यों तक.. यहां से सीधी रेल लाइनें जाती हैं. सारण से लालू यादव लगातार संसदीय चुनाव जीतते रहे. लालू के रेल मंत्री रहते इस इलाके को लगातार ट्रेनों की सौगात मिली. साथ ही मढ़ौरा में रेल चक्का फैक्ट्री भी लगी. ब्रिटिश शासन के खिलाफ आंदोलनों में भी इस इलाके का स्थान अग्रणी रहा था. हालांकि रोजगार की खोज में पलायन इस इलाके से बहुत तेजी से दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे बड़े शहरों में हुआ है. इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या 1,312,219 है. सारण प्रमंडल की महाराजगंज सीट पर सियासत दिलचस्प रही है. 1996 से ही यह सीट जेडीयू के खाते में रही है. तभी से 2009 तक चार बार जेडीयू यह सीट जीती है. केवल एक बार 2009 में उसे पराजय का सामना करना पड़ा था. 1989 में चंद्रशेखर ने महाराजगंज व बलिया से चुनाव लड़ा था वे दोनों जगह से जीते थे मगर उन्होंने महाराजगंज सीट छोड़कर बलिया अपने पास रखा था. इसी कार्यकाल में वे प्रधानमंत्री बने. महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- गोरियाकोठी, महाराजगंज, एकमा, मांझी, बनियापुर और तरैया. इन 6 सीटों में से 4 एकमा, मांझी, बनियापुर और तरैया सारण जिले में आते हैं और बाकी के दो गोरियाकोठी और महाराजगंज सिवान जिले में. महाराजगंज क्षेत्र में राजपूत समुदाय की अच्छी खासी आबादी है और यादव समुदाय की भी. इस सीट पर राजपूत समुदाय से आने वाले बाहुबली नेता प्रभुनाथ सिंह की अच्छी पकड़ मानी जाती है. वे यहां से 4 बार सांसद रह चुके है. पहले जनता दल, फिर समता पार्टी और बाद में आरजेडी के टिकट पर यहां से सांसद चुने गए थे. लेकिन 2014 के मोदी लहर में बीजेपी उम्मीदवार के सामने उन्हें मात खानी पड़ी. प्रभुनाथ सिंह हत्या केस में उम्रकैद की सजा काट रहे हैं.

☞ **2019 का जनादेश :-** 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने जीत हासिल की, उन्हें 546,352 वोट मिले थे. जबकि राजद के रणधीर सिंह 3,15,580 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और बसपा के साधु यादव 25,039 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे.

☞ **2014 का जनादेश :-** 16वीं लोकसभा के लिए 2014 में हुए चुनाव में महाराजगंज सीट से बीजेपी के जनार्दन सिंह सिग्रीवाल जीते. उन्होंने दबंग छवि के नेता प्रभुनाथ सिंह को मात दी. सिग्रीवाल को 3,20,753 वोट मिले थे. जबकि प्रभुनाथ सिंह को 2,82,338 वोट. तीसरे नंबर पर रहे एक और बाहुबली नेता जेडीयू के मनोरंजन सिंह उर्फ

धूमल सिंह जिन्हें 1,49,483 वोट मिले. बिहार का महाराजगंज सीवान जिले का एक नगर है. महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र दो जिलों के विधानसभा सीटों से मिलकर बनी हुई है. सीवान जिले की 2 और सारण जिले की 4 विधानसभा सीटें इस क्षेत्र में आती हैं. महाराजगंज में राजपूत वोटरों की संख्या अधिक है. इसलिए इसे बिहार का चित्तौड़गढ़ भी कहा जाता है. महाराजगंज लोकसभा सीट से अभी बीजेपी के जनार्दन सिंह सिग्रीवाल सांसद हैं. महाराजगंज लोकसभा सीट से ज्यादातर राजपूत और भूमिहार बिरादरी के ही सांसद चुने जाते हैं. इस सीट से ही साल 1989 में देश के पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर चुनाव लड़े और संसद पहुंचे थे. साल 2019 के लोकसभा चुनाव परिणाम की बात करे तो बीजेपी के उम्मीदवार जनार्दन सिंह सिग्रीवाल को 5,46,352 वोट मिले थे. बीजेपी उम्मीदवार सिग्रीवाल ने आरजेडी के रणधीर सिंह को 2,30,772 वोटों से हराया था. आरजेडी के नेता रणधीर सिंह को इस चुनाव में 3,15,580 वोट मिले थे 22 हजार से ज्यादा मतदाताओं ने 2014 के चुनाव में इस सीट पर NOTA का बटन दबाया था. 2014 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी ने जनार्दन सिंह सिग्रीवाल को चुनावी मैदान में उतारा था. उन्होंने ये सीट बीजेपी के खाते में डाल दी थी. सिग्रीवाल को 3,20,753 वोट मिले थे. सिग्रीवाल ने आरजेडी के नेता प्रभुनाथ सिंह को हराया था. आरजेडी के उम्मीदवार प्रभुनाथ सिंह को 2,82,338 वोट मिले थे. जेडीयू से इस सीट से मनोरंजन सिंह ने चुनाव लड़ा था. उन्हें इस सीट से 1,49,483 वोट मिले थे. 2024 के चुनाव में महाराज गंज लोकसभा क्षेत्र से एनडीए प्रत्याशी जनार्दन सिंह सिगरीवाल एवं कांग्रेस के आकाश सिंह के बीच सीधी भिड़ंत हैं। महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र में गोरियाखोटी विधानसभा सीट बीजेपी के खाते में हैं। महाराजगंज विधानसभा सीट से कांग्रेस के विधायक हैं. एकमा विधानसभा सीट से आरजेडी के विधायक हैं. मांझी विधानसभा सीट से सीपीएम का विधायक हैं. बनियापुर विधानसभा सीट से आरजेडी के विधायक हैं. तरैया विधानसभा सीट से जनक सिंह विधायक हैं.

★ **गोपालगंज** :- गोपालगंज बर्ष 1976 में सारण से अलग होकर जिला बना था. यह बिहार के पिछड़े जिलों में गिना जाता है. गोपालगंज संसदीय क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं, जिनमें बैकुंठपुर, बरौली, गोपालगंज, कुचाइकोट, भोरे और हथुआ विधानसभा सीटें शामिल हैं. साल 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में इन 6 सीटों में से 2-2 सीटों पर बीजेपी और जेडीयू को जीत मिली थी, जबकि आरजेडी ने एक और कांग्रेस ने एक सीट पर बाजी मारी थी. गोपालगंज संसदीय क्षेत्र एससी वर्ग के लिए सुरक्षित सीट है. गौरतलब है कि छह विधानसभा क्षेत्र वाली इस संसदीय सीट पर ब्राह्मणों की भी बड़ी तादाद है, जिससे यहां मुकाबला रोचक रहता है. गंडक नदी के पश्चिमी तट पर बसा गोपालगंज जिला भोजपुरी भाषी है और गन्ने के उत्पादन के लिए जाना जाता है. यह उत्तर प्रदेश की सीमा से सटा हुआ है. यहां ग्रामीण जनसंख्या 93.93 प्रतिशत और शहरी जनसंख्या 6.07 प्रतिशत है. साल 2009 में जेडीयू के पूर्णमासी राम ने इस सीट का प्रतिनिधित्व किया था. साल 2014 की मोदी लहर में गोपालगंज से बीजेपी के जनकराम ने जीत हासिल की थी. गोपालगंज संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 13 लाख 49 हजार 72 है. इसमें से 7 लाख 29 हजार 998 पुरुष वोटर और 6 लाख 19 हजार 74 महिला वोटर हैं.

☞ **2019 का जनादेश** :- इस लोकसभा सीट से कुल 13 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे थे. इस लोकसभा सीट पर जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) ने डॉ. आलोक कुमार सुमन को उम्मीदवार बनाया था, जबकि बहुजन समाज पार्टी ने कुणाल किशोर विवेक को चुनाव मैदान में उतारा था. जेडी(यू) के आलोक कुमार सुमन 5,68,150 वोट से जीते आरजेडी के सुरेंद्र राम को 2,81,716 वोट मिले नोटा को 51,660 जनता ने चुना। 2014 के लोकसभा चुनाव में गोपालगंज की सीट से बीजेपी के जनक राम विजयी रहे. उनको 4 लाख 78 हजार 773 वोट मिले थे. उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार को 2 लाख 86 हजार 936 वोटों से हराया था. दूसरे नंबर पर रहीं कांग्रेस की डॉ. ज्योति भारती को 1 लाख 91 हजार 837 वोट मिले थे. जेडीयू के अनिल कुमार 1 लाख 419 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे थे. गंडक नदी के किनारे बसा गोपालगंज पूर्णत: खेती पर आधारित है। वर्ष 2009 से यह संसदीय क्षेत्र

अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित है। पूर्व में यह क्षेत्र कांग्रेस का गढ़ रहा। यहां वर्ष 1962 से 1977 तक लगातार चार बार कांग्रेस के द्वारिकानाथ तिवारी सांसद चुने गए। 1980 में कांग्रेस के नगीना राय सांसद बने। 2009 में जदयू के पूर्णमासी राम सांसद चुने गए। मोदी लहर में 2014 में पहली बार भारतीय जनता पार्टी के जनक राम सांसद चुने गए। 2019 में जदयू के उम्मीदवार आलोक कुमार सुमन यहां से सांसद बने। पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद की पत्नी राबड़ी देवी का गोपालगंज गृह जनपद है। यहां छह विधानसभा सीटें हैं–बैकुंठपुर, गोपालगंज, बरौली, कुचायकोट, हथुआ और भोरे।

☞ **बड़ी घटनाएं :**– सासामुसा स्थित चीनी मिल में 23 दिसंबर 2018 को मिल का ब्वायलर फटने से 12 मजदूरों की मौत हो गई। 16 अगस्त 2017 को जहरीली शराब पीने से शहर के खजुरबानी मोहल्ले में 18 लोगों की मौत हो गई। और पांच लोगों की आंख की रोशनी चली गई।

विकास और स्थानीय मुद्दे पिछले पांच साल में गोपालगंज जिला मुख्यालय को बड़ी रेल लाइन से जोड़ा गया। राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज खोला गया, जबकि इंजीनियरिंगकॉलेज का काम प्रगति पर है।बेरोजगारी, बंद हथुआ चीनी मिल को चालू कराने की मांग और सिंचाई के अपर्याप्त साधन प्रमुख स्थानीय मुद्दे हैं। गोपालगंज की खास बातें गोपालगंज बिहार का लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है। देश के लिए 1952 में पहली बार हुए लोकसभा चुनावों के दौरान इस निर्वाचन क्षेत्र का गठन किया गया था। गोपालगंज नगर पालिका और जिला मुख्यालय है। यह क्षेत्र गंडक नदी के किनारे पर स्थित है। इस इलाके की सीमाएं चम्पारण, सिवान जिले के साथ ही उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले से जुड़ती हैं। कई छोटी बड़ी नदियों से घिरे होने के कारण यह क्षेत्र बेहद उपजाऊ है। यहां गन्ना उत्पादन सबसे ज्यादा होता है। यह क्षेत्र प्रदेश की राजधानी पटना से करीब 147 किलोमीटर दूर है, जबकि राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ल्ली से इस क्षेत्र की दूरी 955 किलोमीटर है।

☞ **गोपालगंज में 11 प्रत्याशी रहे मैदान में :**– गोपालगंज से एनडीए, महागठबंधन, बसपा, एमआईएम समेत 11 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। एनडीए से डॉ. आलोक कुमार सुमन और महागठबंधन के प्रत्याशी प्रेम नाथ चंचल उर्फ चंचल पासवान के बीच आमने सामने की टक्कर है। इस लड़ाई में किसका पलड़ा भारी होगा यह 4 जून को स्पष्ट हो पाएगा।

★ **वैशाली :**– वैशाली बिहार राज्य का एक जिला और लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है. यह तिरहुत डिवीजन का एक हिस्सा है. 1972 में मुजफ्फरपुर से अलग होकर वैशाली को एक अलग जिला बनाया गाया. 2011 की जनगणना के मुताबिक इसकी जनसंख्या 34.95 लाख थी. यहां की औसत साक्षरता दर 66.60 फीसदी है, जिसमें 75.41 फीसदी पुरुष और 56.73 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं. वैशाली सीट पर वोटरों की कुल संख्या 12 लाख 78 हजार 891 है. इसमें से 6 लाख 81 हजार 119 पुरुष वोटर हैं, जबकि 5 लाख 97 हजार 772 महिला वोटर हैं. वैशाली संसदीय सीट के तहत विधानसभा की 6 विधानसभा सीटें आती हैं, जिनमें मीनापुर, कांति, बरुराज, पारू, साहेबगंज और वैशाली लोकसभा सीटें शामिल हैं. बिहार की वैशाली लोकसभा सीट लंबे समय तक आरजेडी के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह का सियासी गढ़ रहा है. वैशाली सीट से कांग्रेस के दिग्विजय नारायण सिंह ने पहली बार चुनाव जीता था. वो लगातार पांच बार यहां से लोकसभा के लिए चुने जा चुके हैं. उधर, इस सीट से जीतने वाली पहली महिला जनप्रतिनिधि थीं किशोरी सिन्हा थी. साल 1980 और 1984 में किशोरी सिन्हा, 1989 में उषा सिन्हा यहां से जीतने में कामयाब रहीं थी. साल 1994 में हुए उपचुनाव में समता पार्टी की लवली आनंद इस सीट से चुनकर संसद पहुंचीं थी. वो बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी हैं. मोदी लहर में बीजेपी के सहयोगी दल एलजेपी को साल 2014 और 2019 में कामयाबी मिली थी.

☞ **2019 का जनादेश :**– लोकसभा चुनाव में इस सीट से एलजेपी के वीणा देवी ने जीत हासिल की, उन्हें 5,68,215 वोट मिले थे. जबकि आरजेडी के रघुवंश प्रसाद सिंह 3,33,631 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और आईएनडी. की

आभा राय 27,497 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे.

☞ **2014 का जनादेश :-** 16वीं लोकसभा के लिए 2014 में हुए चुनाव में वैशाली सीट से एलजेपी के रामा किशोर सिंह विजेता रहे. उनको 3 लाख 05 हजार 450 वोट मिले थे. गौरतलब है कि रामविलास पासवान की पार्टी एलजेपी इस चुनाव में एनडीए के साथ मिलकर लड़ी थी और उसे मोदी लहर का पूरा फायदा मिला था. आरजेडी उम्मीदवार और पूर्व केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह दो नंबर पर रहे. उनको 2 लाख 06 हजार 183 वोट मिले. 1 लाख 04 हजार 229 वोटों के साथ बाहुबली मुन्ना शुक्ला की पत्नी और निर्दलीय उम्मीदवार अनु शुक्ला तीसरे नंबर पर रहीं. इस सीट से 2009 के चुनाव में रघुवंश प्रसाद सिंह ने जेडीयू के विजय कुमार शुक्ला को 21 हजार 405 वोट से हराया था. वैशाली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र भगवान महावीर की जन्मस्थली और भगवान बुद्ध की कर्मभूमि है। इसके अलावा जैन मतावलंबियों के लिए पवित्र नगरी भी है। वैशाली राष्ट्रीय स्तर पर फल उत्पादन के लिए जाना जाता है। वैशाली लोकसभा सीट 1977 में पहली बार गठित हुआ। इस सीट पर कांग्रेस के अलावा जनता दल, राजद, जनता पार्टी, कांग्रेस, बिहार पीपुल्स पार्टी और लोजपा ने जीत दर्ज कर चुकी है। दिग्विजय नारायण सिंह, किशोरी सिन्हा, उषा सिन्हा, शिवशरण सिंह, रघुवंश प्रसाद सिंह इस क्षेत्र के चर्चित नाम हैं। वैशाली, कांटी, मीनापुर, बरूराज, साहेबगंज और पारू इस इलाके की विधानसभाएं हैं।

☞ **वैशाली के वोटरों का हिसाब :-** 17 लाख 18 हजार 311 मतदाता राजपूत, यादव और भूमिहार जाति की संख्या सबसे अधिक और साक्षरता दर: 66%। पिछले पांच साल में वैशाली लोकसभा क्षेत्र में हाजीपुर- सुगौली रेलपथ का निर्माण चल रहा है। देवरिया-मुजफ्फरपुर पथ का चयन एनएच के लिए हुआ है। कांटी थर्मल की दूसरी यूनिट की शुरुआत हुई। 142 छोटी-बड़ी सड़कों का निर्माण हुआ। रघई पुल चालू हो गया है। मोतीपुर स्टेशन के विस्तार की योजना की शुरुआत हुई। यहां के चुनावी मुद्दे में सड़क, जलजमाव. सिंचाई. चीनी मिल अहम हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में लोजपा रामविलास की पार्टी ने वीणा देवी को अपना प्रत्याशी बनाया है तथा राजद ने विजय कुमार शुक्ला को अपने उम्मीदवार बनाया है. यह सीट पूर्व से ही हॉट सीट की श्रेणी में रहा है यहाँ से कई बाहुबलियों ने अपना किस्मत आजमाया है।

★ **शिवहर :-** शिवहर पहले मुजफ्फरपुर फिर हाल तक सीतामढी जिले का अंग रहा है. इस जिले के पूर्व एवं उत्तर में सीतामढी, पश्चिम में पूर्वी चंपारण तथा दक्षिण में मुजफ्फरपुर जिला स्थित है. शिवहर बिहार का सबसे छोटा एवं आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत ही पिछड़ा जिला है. बारिश एवं बाढ़ के दिनों में इसका संपर्क पड़ोसी जिलों से भी पूरी तरह कट जाता है. बज्जिका एवं हिन्दी यहां की मुख्य भाषाएं हैं. शिवहर लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर जुगल किशोर सिन्हा जैसी शख्सियतों ने भी किया है. जुगल किशोर सिन्हा को भारत में सहकारी आंदोलन के जनक के रूप में जाना जाता है. उनकी पत्नी राम दुलारी सिन्हा भी स्वतंत्रता सेनानी थीं. वे केंद्रीय मंत्री और गवर्नर भी रही थीं. वे बिहार की पहली महिला पोस्ट ग्रेजुएट थीं. आजादी के बाद देश में जब पहला चुनाव हुआ तो इस सीट का नाम था मुजफ्फरपुर नॉर्थ-वेस्ट सीट. 1953 में कांग्रेस के टिकट पर इस सीट से स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर जुगल किशोर सिन्हा जीतकर लोकसभा पहुंचे थे. इस संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,269,056 है. इसमें 591,390 महिला वोटर और 677,666 पुरुष मतदाता हैं. शिवहर लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- मधुबन, चिरैया, ढाका, शिवहर, रिगा और बेलसंड.

☞ **2019 का जनादेश :-** बीजेपी की रमा देवी 6,08,678 वोटों से जीती। आरजेडी के सैयद फैसल अली को 2,68,318 वोट मिले।

आईएनडी. के केदार नाथ प्रसाद को 18,426 वोट मिले।

☞ **2014 का जनादेश :-** 2014 में 16वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव में शिवहर सीट बीजेपी के खाते में गई. बीजेपी की उम्मीदवार रमा देवी को इस चुनाव में 3,72,506 वोट हासिल हुए. वहीं आरजेडी के मोहम्मद अवनारुल हक को 2,36,267 वोट हासिल हुए थे. जेडीयू के शाहिद अली खान 79,108 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे. जबकि इस सीट से पूर्व सांसद और जेल में सजा काट रहे बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद को 46,008 वोट मिले और वे चौथे स्थान पर रहीं थी बिहार का शिवहर जिला राज्य के सबसे छोटे जिलों में से एक है। शिवहर पहले सीतामढ़ी जिले का अनुमंडल था। 1994 में शिवहर को नया जिला बना दिया गया। बिहार की शिवहर लोकसभा क्षेत्र से अभी बीजेपी की रमा देवी सांसद हैं। रमा देवी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल के उम्मीदवार सैयद फैजल अली को हराया था। यह सीट पहले कांग्रेस का गढ़ हुआ करती थी। अब यह सीट बीजेपी का गढ़ है। रमा देवी यहां लगातार तीन बार से सांसद हैं। शिवहर 1994 में सीतामढ़ी से अलग होकर नया जिला बना। शिवहर लोकसभा क्षेत्र में 6 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं: शिवहर लोक सभा में 12 उम्मीदवार मैदान हैं। यहां आमने सामने की लड़ाई है। राजद से रितु जायसवाल और जेडीयू से बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद से सीधी लड़ाई है। दोनों के बीच मुकाबला टक्कर का होने वाला है। आज शाम छह बजे तक सभी के भाग्य का फैसला ईवीएम में कैद हो जाएगा।

★ **पूर्वी चंपारण :-** पूर्वी चंपारण का मुख्यालय मोतिहारी है। इस क्षेत्र की सीमाएं नेपाल से जुड़ती हैं। पुराण में वर्णित है कि राजा उत्तानपाद के पुत्र भक्त ध्रुव ने यहां के तपोवन नामक स्थान पर ज्ञान प्राप्ति के लिए घोर तपस्या की थी। यह क्षेत्र देवी सीता की शरणस्थली भी रहा है। यहां भगवान बुद्ध ने लोगों को उपदेश दिए और विश्राम किया। यहां कई बौद्ध स्तूप भी हैं। आजादी की लड़ाई में नील आंदोलन समेत कई प्रमुख आंदोलनों को महात्मा गांधी ने यहीं से शुरू किया था। इस क्षेत्र में प्रमुख शैक्षिक संस्थारनों में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग शामिल हैं। यहां से एनडीए से राधामोहन सिंह उम्मीदवार हैं जबकि महागठबंधन से राजेश कुमार कुशवाहा उम्मीदवार हैं। बीजेपी और वीआईपी के बीच कांटे की टक्कर होगी। कुल मिलाकर 12 उम्मीदवार मैदान में है। पूर्वी चंपारण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र बिहार के 40 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है. परिसीमन से पहले पूर्वी चंपारण लोकसभा सीट मोतिहारी सीट के नाम से जानी जाती थी. आजादी के बाद से इस सीट पर कांग्रेस का बर्चस्व रहा था. लेकिन 1977 में जनता पार्टी उम्मीवार ने पहली बार इस सीट पर कब्जा जमाया. उसके बाद इस सीट से 5 बार बीजेपी जीती थी. 1952 में देश में हुए पहले चुनाव से ही इस सीट पर कांग्रेस का परचम लहराया. 1971 तक इस सीट से पांच बार कांग्रेस के विभूति मिश्रा विजयी रहे थे. लेकिन इमरजेंसी के बाद हुए 1977 के चुनाव में यहां का गणित बदला. जनता पार्टी के ठाकुर रामापति सिंह चुनाव जीते और कांग्रेस का बर्चस्व खत्म हुआ. 1980 में यहां से सीपीआई के कमला मिश्र मधुकर जीते थे. 1984 में कांग्रेस की प्रभावति गुप्ता जीतीं थी. 1989 में यहां से बीजेपी ने अपने पुराने कार्यकर्ता और आरएसएस स्वयंसेवक राधामोहन सिंह को उतारा था. राधामोहन सिंह चुनाव जीत गए. 1991 में फिर सीपीआई के टिकट पर कमला मिश्र मधुकर चुनाव जीते थे. लेकिन 1996 का चुनाव जीतकर फिर राधामोहन सिंह ने अपना परचम लहराया था. 1998 के चुनाव में राधामोहन सिंह चुनाव हार गए और आरजेडी की रमा देवी चुनाव जीती थी. लेकिन 1999 में अटल लहर में बीजेपी के टिकट पर राधामोहन जीत हासिल करने में कामयाब रहे थे. 2004 में

फिर इस सीट पर सियासत ने पलटी मारी और बीजेपी को हार का सामना करना पड़ा. आरजेडी के ज्ञानेंद्र कुमार जीतने में कामयाब रहे थे. इस लोकसभा क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,187,264 है. इनमें से 640,901 पुरुष वोटर और 546,363 महिला वोटर हैं. बिहार की पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- हरसिद्धी, गोविंदगंज, केसरिया, कल्याणपुर, पिपरा और मोतिहारी.

☞ **2019 का जनादेश :-** बीजेपी के राधा मोहन सिंह 5,74,081 वोट से जीते। आरएलएसपी के आकाश प्रसाद सिंह को 2,81,500 वोट मिले। नोटा को 22,706 जनता ने वोट दिए।

☞ **2014 का जनादेश :-** 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के राधामोहन सिंह ने आरजेडी के विनोद कुमार श्रीवास्तव को हराया. राधामोहन सिंह को 4,00,452 वोट मिले थे. जबकि आरजेडी उम्मीदवार विनोद कुमार श्रीवास्तव को 2,08,289 वोट. तीसरे नंबर पर जेडीयू उम्मीदवार अवनीश कुमार सिंह रहे थे जिन्हें 1,28,604 वोट हासिल हुए थे. वही अब 2024 के इस संग्राम में पूर्वी चंपारण की मोतिहारी सीट पर दिग्गज राधा मोहन सिंह चुनावी मैदान में हैं, जो मोतिहरी में अपने किए गए विकास कार्यों के साथ-साथ प्रधानमंत्री मोदी और नीतीश कुमार के विकास कार्य पर वोट मांग रहे हैं. वहीं उन्हें वीआईपी के राजेश कुशवाहा टक्कर दे रहे हैं. वीआईपी के उम्मीदवार को मुकेश सहनी के वोट बैंक के साथ-साथ आरजेडी के एमवाई समीकरण और कुशवाहा जाति के होने से कुशवाहा वोटर पर उम्मीद है.

★ **पश्चिम चंपारण :-** पश्चिम चंपारण नेपाल की सीमा से सटा हुआ उत्तरी बिहार का हिस्सा है. चंपारण इलाका बिहार के तिरहुत प्रमंडल के अंतर्गत आता है और भोजपुरी भाषी जिला है. महात्मा गांधी की कर्मभूमि चंपारण लंबे समय से सियासी सक्रियता का केंद्र रहा है. 2002 के परिसीमन के बाद 2008 में वाल्मिकी नगर और पश्चिमी चंपारण दो अलग-अलग सीटों के रूप में अस्तित्व में आई. इससे पहले पश्चिम चंपारण का अधिकांश हिस्सा बेतिया सीट के तहत आता था. पश्चिम चंपारण के उत्तर में नेपाल तथा दक्षिण में गोपालगंज जिला स्थित है. इसके पूर्व में पूर्वी चंपारण है जबकि पश्चिम में इसकी सीमा यूपी के पडरौना तथा देवरिया जिले से लगती है. गंडक और सिकरहना तथा इसकी सहायक नदियों के पास होने से पश्चिमी चंपारण जिले की मिट्टी उपजाऊ है. कृषि और छोटे-छोटे गृह उद्योग ही यहां के लोगों के रोजगार का प्रमुख जरिया है. अच्छी क्वालिटी के बासमती चावल तथा गन्ने के उत्पादन के लिए ये जिला मशहूर है. उत्तर प्रदेश और नेपाल की सीमा से लगा पश्चिम चंपारण का इलाका देश के स्वाधीनता संग्राम के दौरान काफी सक्रिय रहा. आजादी के आंदोलन के समय चंपारण के ही एक रैयत राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर महात्मा गांधी अप्रैल 1917 में मोतिहारी आए और नील की खेती से त्रस्त किसानों के अधिकार की लड़ाई लड़ी. अंग्रेजों के समय चंपारण को स्वतंत्र इकाई बनाया गया था. प्रशासनिक सुविधा के लिए 1972 में इसका विभाजन कर पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण दो अलग-अलग जिले बना दिए गए. परिसीमन के बाद 2009 और 2014 के चुनावों में बीजेपी के संजय जायसवाल ने इस सीट से जीत हासिल की. डॉ. संजय जायसवाल के पिता डॉ. मदन प्रसाद जायसवाल भी लोकसभा सांसद रह चुके हैं. 2019 चुनाव से पहले बीजेपी और जेडीयू एकजुट हो गए और बदले समीकरणों में महागठबंधन की चुनौती भी बड़ी है. पश्चिम चंपारण संसदीय क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या है 1,220,868. इसमें से 658,427 पुरुष मतदाता हैं जबकि 562,441 महिला वोटर हैं. पश्चिम चंपारण लोकसभा सीट के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- नौतन, चनपटिया, बेतिया, रक्सौल, सुगौली और नरकटिया. 2015 के विधानसभा चुनाव के नतीजों पर गौर करें तो इस संसदीय क्षेत्र की 6 विधानसभा सीटों में से 4 बीजेपी ने जीते थे जबकि 1-1 सीट आरजेडी और कांग्रेस के हाथ आई थी.

☞ **2019 का जनादेश :-** 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के डॉ. संजय जयसवाल ने जीत हासिल की, उन्हें 6,03,706 वोट मिले. जबकि आरएलएसपी के बृजेश कुमार कुशवाह को 3,09,800 वोट मिले और नोटा को मतदाताओं ने 45,699 मत दिए. 2014 के चुनाव में पश्चिम चंपारण लोकसभा सीट से बीजेपी के डॉ. संजय जायसवाल ने जेडीयू उम्मीदवार और फिल्म निर्देशक प्रकाश झा को हराया था. प्रकाश झा इस सीट से चुनावी मैदान में अपनी किस्मत आजमाने उतरे थे लेकिन मोदी लहर में जीत बीजेपी के हाथ लगी. बीजेपी उम्मीदवार डॉ. संजय जायसवाल को 3,71,232 वोट मिलेल थे जबकि प्रकाश झा को 2,60,978 वोट मिले थे. वहीं आरजेडी के रघुनाथ झा को 1,21,800 वोट मिले थे.

एक सर्वे के अनुसार ए छ.क.ए। गठबंधन में शामिल राजद के लिए पश्चिमी चंपारण लोकसभा की विधानसभा सीटों पर राघोशरण पांडेय पहली पसंद रहे। प. चंपारण से 5 विधानसभा सीटों पर राजद से राघोशरण ही पहली पसंद हैं। बिहार की पश्चिमी चंपारण लोकसभा सीट से 40% लोगों ने राजद के राघोशरण पांडेय को समर्थन दिया। जबकि दूसरे नंबर पर प्रत्याशी शशि भूषण सिंह को सिर्फ 18% लोगों ने ही पसंद किया।

☆ **वाल्मीकिनगर :-** वाल्मीकिनगर लोकसभा सीट का इलाका नेपाल की सीमा से सटा हुआ है और बिहार के सुदूर उत्तर में पड़ता है. साल 2002 के परिसीमन के बाद साल 2008 में पहली बार ये लोकसभा सीट अस्तित्व में आई. इससे पहले ये सीट बगहा के नाम से जानी जाती थी. साल 2014 में इस सीट से बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे जीतकर लोकसभा पहुंचे थे. आजादी के बाद से चंपारण के इलाके में कांग्रेस हर चुनाव में अपना दमखम दिखाती आ रही थी, लेकिन इमरजेंसी के बाद हालात बदले और बीजेपी ने यहां अपनी पकड़ मजबूत कर ली. परिसीमन के बाद जब 2009 में पहली बार चुनाव हुए तो यहां से जेडीयू के वैद्यनाथ प्रसाद महतो जीते. उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार फखरुद्दीन को हराया था. इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की संख्या 12 लाख 75 हजार 653 है. इनमें से पुरुष वोटरों की संख्या 6 लाख 90 हजार 155 है, जबकि महिला वोटरों की संख्या 5 लाख 85 हजार 498 है. नेपाल की सीमा से सटे होने के कारण और नक्सल प्रभाव के कारण ये इलाका सुरक्षा की दृष्टि से काफी संवेदनशील माना जाता है. वाल्मीकिनगर संसदीय क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं, जिनमें वाल्मीकिनगर विधानसभा सीट, रामनगर, नरकटियागंज, बगहा, लौरिया और सिकटा विधानसभा सीटें शामिल हैं. 2019 का जनादेश में जदयू के बैद्यनाथ प्रसाद महतो 6,02,660 वोटों से जीते। कांग्रेस के शाश्वत केदार को 2,48,044 वोट मिले। बसपा के दीपक यादव को 62,963 वोट मिले। साल 2014 के लोकसभा चुनाव में वाल्मीकिनगर सीट से बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे ने जीत दर्ज की थी. सतीश चंद्र दुबे को 3 लाख 64 हजार 13 वोट हासिल हुए थे और कांग्रेस के पूर्णमासी राम को एक लाख 18 हजार वोटों से हराया था. पिछले लोकसभा चुनाव में जेडीयू के वैद्यनाथ प्रसाद महतो तीसरे नंबर पर रहे थे. उनको 81 हजार 612 वोट हासिल हुए थे.

राजनीति के मायने में बिहार सबसे चर्चित राज्यों में से एक है. यहां की जनता सभी मुद्दों को देखते हुए वोट करती है. बिहार के लोकसभा

क्षेत्रों की बात करें तो सबसे पहली सीट वाल्मीकि नगर है. परिसीमन के बाद यह लोकसभा सीट साल 2008 में अस्तित्व में आई है. साल 2009 में यहां पहली बार लोकसभा के चुनाव हुए. वाल्मीकि नगर लोकसभा क्षेत्र से जनता दल यूनाइटेड (JDU) के सुनील कुमार कुशवाहा सांसद हैं. इस सीट में साल 2020 में उपचुनाव हुए थे. जेडीयू के उम्मीदवार सुनील कुमार कुशवाहा ने जीत हासिल की है. सुनील कुमार कुशवाहा को उपचुनाव के नतीजों में 403,360 वोट मिले. जेडीयू प्रत्याशी ने कांग्रेस उम्मीदवार प्रवेश कुमार मिश्रा को 22,000 वोटों से हराया था. प्रवेश कुमार मिश्रा को 2020 के उपचुनाव में 380,821 वोट मिले. पिछली बार के 2019 के लोकसभा चुनाव परिणाम की बात करें तो यहां पर जेडीयू उम्मीदवार बैद्यनाथ प्रसाद महतो ने जीत दर्ज की थी. बैद्यनाथ प्रसाद महतो को 602660 वोट मिले थे. महतो ने कांग्रेस उम्मीदवार शाश्वत केदार को हराया था. कांग्रेस उम्मीदवार को 248044 वोट मिले थे. जेडीयू सांसद के निधन के बाद इस सीट पर साल 2020 में उपचुनाव कराया गया. जेडीयू से सुनील कुमार कुशवाहा ने जीत दर्ज कर एक बार फिर पार्टी के खाते में ये सीट दे दी. वाल्मीकि नगर लोकसभा सीट ब्राम्हण बाहुल्य सीट है. यहां ब्राम्हण मतदाताओं की संख्या 2 लाख से ज्यादा है. इस सीट पर थारु जनजाति और अल्पसंख्यक मतदाताओं की संख्या करीब 2-2 लाख है. इसके साथ ही यहां कुशवाहा और यादव समाज के मतदाता भी काफी संख्या में हैं. इस

सीट पर कुशवाहा, यादव और अल्पसंख्यक वोटरों का रुझान ही पार्टी के मतदाताओं की हार और जीत तय करती है. वाल्मीकि नगर लोकसभा सीट में में 6 विधानसभा आती हैं- 1. वाल्मीकि नगर, 2. रामनगर, 3. नरकटियागंज, 4. बगहा, 5. लौरिया, 6 सिकटा विधानसभा क्षेत्र है। वाल्मीकिनगर लोकसभा सीट का इलाका नेपाल की सीमा से सटा हुआ है और बिहार के सुदूर उत्तर में पड़ता है. साल 2002 के परिसीमन के बाद साल 2008 में पहली बार ये लोकसभा सीट अस्तित्व में आई. इससे पहले ये सीट बगहा के नाम से जानी जाती थी. साल 2014 में इस सीट से बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे जीतकर लोकसभा पहुंचे थे.

आजादी के बाद से चंपारण के इलाके में कांग्रेस हर चुनाव में अपना दमखम दिखाती आ रही थी, लेकिन इमरजेंसी के बाद हालात बदले और बीजेपी ने यहां अपनी पकड़ मजबूत कर ली. परिसीमन के बाद जब 2009 में पहली बार चुनाव हुए तो यहां से जेडीयू के वैद्यनाथ प्रसाद महतो जीते. उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार फखरुद्दीन को हराया था. इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की संख्या 12 लाख 75 हजार 653 है. इनमें से पुरुष वोटरों की संख्या 6 लाख 90 हजार 155 है, जबकि महिला वोटरों की संख्या 5 लाख 85 हजार 498 है. नेपाल की सीमा से सटे होने के कारण और नक्सल प्रभाव के कारण ये इलाका सुरक्षा की दृष्टि से काफी संवेदनशील माना जाता है. बिहार के इकलौते टाइगर रिजर्व को अपने आप में समेटे वाल्मीकि नगर लोकसभा क्षेत्र में अबकी बार आर पार की लड़ाई चल रही है. यहां वर्तमान सांसद सुनील कुमार एनडीए की ओर से जदयू के प्रत्याशी हैं, वहीं राजद ने बगहा के चीनी मिल मालिक दीपक यादव को अपना प्रत्याशी बनाया है. कांटे की टक्कर के बीच दोनों प्रमुख गठबंधनों के उम्मीदवारों की मुसीबत बागी प्रत्याशियों ने बढ़ा रखी है.? बता दें कि पिछले चुनाव में कांग्रेस के प्रत्याशी रहे प्रवेश मिश्रा जहां इस बार निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं, वहीं कल तक बीजेपी में रहने वाले दिनेश अग्रवाल ने भी स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में प्रचार दाखिल कर चुनावी अखाड़ा में उतर चुके हैं. जबकि असम में निर्दलीय दो बार सांसद रहे गणा सुरक्षा पार्टी के नव कुमार सरनिया उर्फ हीराबाई इस बार वाल्मीकिनगर से चुनाव लड़कर राजनीतिक तापमान को और गर्मा दिया है. वाल्मीकिनगर सीट पर बहुजन समाज पार्टी ने दुर्गेश सिंह चौहान ,आजाद समाज पार्टी ने सफी मोहम्मद मियां को अपना उम्मीदवार बनाया है. वहीं चंदेश्वर मिश्र, परशुराम साह और शंभू प्रसाद भी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मैदान में हैं.

☞ **एनडीए का गढ़ रहा है वाल्मीकिनगर** :- भारत नेपाल सीमा पर स्थित वाल्मीकिनगर लोकसभा क्षेत्र वैसे तो एनडीए का गढ़ माना जाता है. वर्तमान सांसद सुनील कुमार के पिता बैजनाथ महतो 2019 के चुनाव में सांसद बने थे. 1 साल बाद ही उनके निधन के बाद रिक्त हुए इस सीट पर सुनील कुमार विजयी हुए. 2014 में बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे यहां से सांसद बने, वहीं 2009 के चुनाव में बैजनाथ प्रसाद महतो जदयू से सांसद निर्वाचित हुए थे. परिसीमन के पूर्व वाल्मीकिनगर लोकसभा क्षेत्र बगहा लोकसभा क्षेत्र के नाम से जाना जाता था. इस सीट पर समता पार्टी के जमाने से लगातार एनडीए ही जीत हासिल करती रही है.

★ **मतदान में पांचवां चरण भी नहीं खींच पाया बड़ी लकीर** :- पांचवे चरण की पांच सीटों पर शाम छः बजे तक 55.85 प्रतिशत मतदान हुआ। इन पांच सीटों पर 2019 के लोकसभा चुनाव में 57.07 फीसदी बोटिंग हुई थी। इस लिहाज से पिछले बार के मुकाबले 1.22 प्रतिशत कम मतदान हुआ है। मुजफ्फरपुर में सबसे अधिक 58.10 प्रतिशत और मधुबनी में सबसे कम 52.20 प्रतिशत मतदान रिकॉर्ड किया गया। राज्य निर्वाचन आयोग के अनुसार सीतामढ़ी में 57.55 प्रतिशत, मधुबनी में 52.20 प्रतिशत, मुजफ्फरपुर में 58.10 प्रतिशत, सारण में 54.50 प्रतिशत और हाजीपुर (सु) 56.84 प्रतिशत मतदान हुआ। इस चरण का मतदान खत्म होने के साथ ही चिराग पासवान, राजीव प्रताप रूडी, रोहिणी आचार्य, देवेशचंद्र ठाकुर, मो. एए फातमी, शिवचंद्र राम सहित 80 उम्मीदवारों का भाग्य ईवीएम में बंद हो गया। पांचवें चरण के मतदान के साथ ही, राज्य की 60 फीसदी लोकसभा क्षेत्रों (24 लोकसभा क्षेत्रों) में चुनाव संपन्न हो गया। सारण में मतदान के दौरान पथराव, मारपीट व अफसरों के चोटिल होने की भी घटनाएं हुई। बड़ा तेलपा बूथ पर पहुंची राजद प्रत्याशी राहिणी आचार्य के खिलाफ एक गुट के लोगों ने हंगामा कर नारेबाजी की और पथराव किया। पथराव में कुछ गाड़ियों के शीशे फूटने की बात सामने आ रही है। वहीं, रिविलगंज में पथराव के दौरान अपर थानाध्यक्ष के हाथ में चोट आई। डोरीगंज में प्रशासन व ग्रामीणों में तीखी झड़प हुई। इस दौरान पथराव में उत्पाद आयुक्त का सिर फट गया।●

Will anti-Pakistan rhetoric influence India's elections?

Old video footage featuring controversial comments made by Mani Shankar Aiyar, a veteran leader of the opposition Indian National Congress (INC) party, have recently resurfaced — raising eyebrows as India's elections enter their final two phases. In the footage, Aiyar described Pakistanis as the "biggest asset of India" and recommended that India should resume dialog with Pakistan. His views were echoed by Farooq Abdullah, the former chief minister of the Muslim-majority state Jammu and Kashmir.

Pakistan plays into India's elections

The video's reappearance provided Indian Prime Minister Narendra Modi and the leaders of his Bharatiya Janata Party (BJP) an opportunity to paint the Congress party as "soft" on Pakistan at the height of election season. "If Pakistan is not wearing bangles, we will make them wear bangles," Modi said in a scathing attack at a rally in Bihar last week. "They don't have flour, they do not have electricity, now I have come to know that they even have a scarcity of bangles." Modi had said that his government's approach to tackling terror had ushered in a sea change compared to what had taken place during Congress' years in power. "During the Congress government, the news headlines were of India handing over another dossier to Pakistan about terror activities," Modi said at an election rally in the Latur constituency in India's western state of Maharashtra. "Today, India doesn't send dossiers. Today, India kills terrorists on its own turf," added Modi. Anti-Pakistan sentiments have so far not flared during the election season, however, India's neighbor and rival has now become somewhat of a opportune punching bag for politicians. Over the past few weeks, political parties have exchanged sharp barbs on Pakistan, despite the fact that foreign policy issues have not figured prominently in the campaign so far. "It [Pakistan] remains an emotive issue for India. After years of suffering cross-border terrorism and Pakistan-sponsored militancy in Kashmir, including the 2008 Mumbai terror attacks and the Pulwama attack on paramilitary troopers in 2019, it leaves an indelible scar on the Indian psyche," Shazia Ilmi, a spokesperson for Modi's BJP, told DW. "The remarks made by Mani Shankar Aiyer and Farooq Abdullah are contentious and condemnable," added Ilmi.

National security discourse

In 2019, when Modi won his second consecutive term in office, the BJP's campaign focused heavily on Pakistan, an important electoral issue at the time. Months before the 2019 vote, a suicide bomber had attacked a

convoy of vehicles carrying Indian paramilitary forces in Indian-administered Kashmir, killing 46 soldiers. India responded by launching warplanes in Balakot, deep inside Pakistan, where it claimed to have killed militants who had been planning to strike targets in India. Ajay Bisaria, India's former high commissioner to Pakistan, told DW that the current electoral discourse is more about a posture on national security than about Pakistan policy. "In 2019, we saw a strong national security-based campaign by the BJP, after the Pulwama attacks and the Balakot airstrikes by India," said Bisaria. "This time, we see no comparable national security issue, except that this time around, the ruling dispensation is justifiably claiming credit for both its Kashmir and Pakistan policies," the former envoy added.

Political bluster

Article 370 of the Indian constitution allowed Jammu and Kashmir to have its own constitution and a degree of internal autonomy. However, the Indian government revoked this status in 2019 and divided the state into two union territories — the Union Territory of Jammu and Kashmir and the Union Territory of Ladakh — directly governed by New Delhi. "The Balakot airstrikes and [India's] article 370 moves can now be reviewed five years later and a reasonable claim be made that Balakot set up credible deterrence against terrorism and the article 370 abrogation set Jammu and Kashmir on a peace trajectory," said Bisaria. At recent election rallies, BJP leaders Amit Shah, India's home minister; and Uttar Pradesh Chief Minister Yogi Adityanath doubled down, emphasizing that a re-elected BJP government would take the additional step of "taking back" Pakistan-administered Kashmir. Their statements were in response to recent violent protests witnessed in several parts of Pakistan-administered Kashmir over soaring food and energy costs amid a severe economic crisis. "Congress leaders like Mani Shankar Aiyar say it should not be done as they have an atom bomb," Shah said, referring to the protests. "But let me say that 'Pakistan-occupied Kashmir (PoK)' is part of India and we will take it." "Clearly, reclaiming PoK is not an immediate issue but the unrest in the region is a stimulus to restate a known position and to underline the power differential between the countries," added Bisaria.

Obsession with Pakistan or electioneering?

Strategic expert C. Raja Mohan, a senior fellow of the Asia Society Policy Institute, said Modi has managed to change the terms of engagement with Pakistan. "It is unfortunate that Modi chose to combine his vigorous response to heaping contempt on Pakistan by pointing to its current economic crisis," Raja Mohan told DW. "Through the campaign, the prime minister and his Cabinet colleagues have flaunted their new willingness to get inside Pakistan and target the terrorists." "The needless verbal aggression against Pakistan comes at a time when the new Pakistan government, led by the Sharif brothers — Nawaz and Shehbaz — are sending interesting signals on improving ties with India," Mohan added. However, Mohan was quick to point out that Modi and his right-wing BJP might hope that their interlocutors in Pakistan will understand that the high-pitched rhetoric is just part of electioneering and does not reflect policy intentions. Reacting to various statements made by Indian leaders including Modi, Pakistan's Foreign Office said these reflected an unhealthy and entrenched obsession with Pakistan and revealed a deliberate intent to exploit hyper-nationalism for electoral gains. "These also signify a desperate attempt to deflect attention from mounting domestic and international criticism," Pakistani Foreign Ministry spokeswoman Mumtaz Zahra Baloch told a weekly press briefing when asked about statements being made during the run-up to elections.

सीएम हाउस में महिला सांसद की पिटाई

● संजय सिन्हा

इन दिनों शर्द कही जाने वाली दिल्ली तीन बड़े कारणों से गर्मागर्म माहौल बनायी हुई है। पहला कारण देश में चल रहा लोकसभा चुनाव है तो दूसरी तरफ आबकारी घोटाले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का जेल जाना। और तो और ये दो कारणों में मीडिया अपनी सुर्खिया बटोर ही रही थी कि तीसरा स्वाती मालीवाल के साथ मारपीट का है। बता दें कि आप सांसद स्वाति मालीवाल ने अपने बयानों में 13 मई का पूरा घटनाक्रम बताया। उन्होंने यह भी बताया कि पुलिस को किन हालातों में पीसीआर कॉल की थी। उन्होंने कहा है कि मैं दिल्ली में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलने उनके कैंप ऑफिस गई थी। वहां सीएम के पीएस बिभव कुमार को फोन किया। लेकिन संपर्क नहीं हो सका। फिर मैंने उसके मोबाइल नंबर पर वॉट्सएप के माध्यम से एक मैसेज भेजा। इस पर भी मुझे कोई जवाब नहीं मिला। मालीवाल ने बताया कि इसके बाद मैं घर के मुख्य दरवाजे से अंदर गई। जैसा कि मैं पिछले सालों से हमेशा से करती आई हूं। बिभव कुमार वहां मौजूद नहीं थे, इसलिए मैं घर के अंदर दाखिल हुई और वहां मौजूद कर्मचारियों को सूचित किया कि वो सीएम से मिलने के बारे में बताएं। मुझे बताया गया कि वो घर में मौजूद हैं और मुझे ड्राइंग रूम में जाने के लिए कहा गया। उन्होंने कहा कि मैं ड्राइंग रूम में जाकर सोफे पर बैठ गई और मिलने का इंतजार करने लगी। एक स्टाफ ने आकर मुझे बताया कि सीएम मुझसे मिलने आ रहे हैं। इसके बाद सीएम के पीएस विभव कुमार कमरे में घुस आए। वो बिना किसी उकसावे पर चिल्लाने लगा और यहां तक कि मुझे गालियां भी देने लगा। मैं इस घटना से स्तब्ध रह गई। मैंने उससे कहा कि वो मुझसे इस तरह बात करना बंद करे और सीएम को फोन करे। उसने कहा तू कैसे हमारी बात नहीं मानेगी? इसके बाद उसने मुझे थप्पड़ मारना शुरू कर दिया। उसने मुझे कम से कम 7-8 बार थप्पड़ मारे। मैं चिल्लाती रही। मैं बिल्कुल सदमे में थी और बचाव के लिए उसे धकेलने की कोशश की। वो मुझ पर झपटा और बुरी तरह मेरी शर्ट को ऊपर खींच लिया। मेरी शर्ट के बटन खुल गए और मैं नीचे गिर गई और सेंटर टेबल पर मेरा सिर मार दिया। मैं लगातार मदद के लिए चिल्लाती रही। मालीवाल ने कहा कि बिभव कुमार नहीं माना और अपने पैरों से मेरी छाती, पेट और शरीर के निचले हिस्से पर लात मारकर मुझ पर हमला किया। मुझे पीरियडस हो रहे थे। मैंने उससे कहा कि मुझे जाने दें। मैं बहुत दर्द में हूं। हालांकि, उसने बार-बार पूरी ताकत से मुझ पर हमला किया। मैं कोशिश कर रही थी कि किसी तरह से बाहर निकल जाऊं। फिर मैं ड्राइंग रूम के सोफे पर बैठ गई और हमले के दौरान चश्मा नीचे गिर गया। उन्होंने कहा कि इस हमले से मैं भयानक सदमे की स्थिति में थी। मुझे गहरा सदमा लगा और मैंने 112 नंबर पर फोन किया और

घटना की सूचना दी। बिभव ने मुझे धमकी देते हुए कहा, कर ले, जो तुझे जो करना है। तू हमारा कुछ नहीं कर पाएगी ऐसी जगह गाड़ देंगे किसी को भी पता नहीं चलेगा। फिर जब उसे एहसास हुआ कि मैं 112 नंबर पर हूं तो वो कमरे से बाहर चला गया। विभव के कहने पर सुरक्षाकर्मियों ने मुझसे चले जाने के लिए कहा। मैं उनसे कहती रही कि मुझे बेरहमी से पीटा गया है और उन्हें मेरी हालत देखनी चाहिए और पीसीआर पुलिस के आने तक इंतजार करना चाहिए। हालांकि, उन्होंने मुझे कैंपस छोड़ने के लिए कहा। मुझे सीएम आवास के बाहर ले जाया गया और मैं कुछ देर के लिए उनके घर के बाहर फर्श पर बैठी, क्योंकि मैं गहरे दर्द में थी। बाद में पीसीआर पुलिस आई। मैं ऑटो में बैठकर जाने के लिए निकली। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत दर्द था और पूरी तरह से सदमे में थी और टूट गई थी। किसी तरह मैंने हिम्मत जुटाई और ऑटो को वापस जाने के लिए कहा और मामले की रिपोर्ट करने के लिए सिविल लाइंस थाने पहुंची। मैंने SHO को घटना के बारे में बताया। मुझे भयानक दर्द था और मेरे मोबाइल पर भी मीडिया के खूब कॉल आने लगे। दर्द और घटना का राजनीतिकरण ना करने की वजह से मैं लिखित शिकायत दर्ज किए बिना पुलिस स्टेशन से चली गई। मेरे हाथ-पैर और पेट में हमले के कारण बहुत दर्द हो रहा था। पुलिस ने दिल्ली के सिविल लाइन थाने में स्वाति मालीवाल की शिकायत पर विभव कुमार के विरुद्ध IPC की धारा 354 (छेड़छाड़), 506 (जान से मारने की धमकी), 509 (अभद्र कमेंट करना), 323 (मारपीट) के तहत FIR दर्ज की है।

गौरतलब हो कि आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल का आम आदमी पार्टी से मोहभंग हो गया है। केजरीवाल के घर उनके सहयोगी बिभव कुमार द्वारा पिटाई का आरोप लगाने वाली स्वाति ने सोशल मीडिया साइट पर अपनी प्रोफाइल फोटो बदल दी है। यहां अब केजरीवाल की जगह ब्लैक बैकग्राउंट नजर आ रहा है। इस मामले में आम आदमी पार्टी अब बिभव कुमार के साथ खड़ी नजर आ रही हैं। केजरीवाल सरकार में मंत्री आतिशी ने दावा किया कि केजरीवाल को फंसाने के लिए भाजपा ने मारपीट के मामले की साजिश रची। उन्होंने कहा कि इस साजिश का चेहरा स्वाति मालीवाल हैं। कुमार पर उनके द्वारा लगाए गए आरोप निराधार हैं। इस पर स्वाति मालीवाल ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि पार्टी में कल के आए नेताओं से 20 साल पुरानी कार्यकर्ता को भाजपा का एजेंट बता दिया। दो दिन पहले पार्टी ने सब सच कबूल लिया था और आज यू-टर्न ले लिया। उन्होंने कुमार का नाम लिए बिना कहा कि ये गुंडा, पार्टी को धमका रहा है कि मैं गिरफ्तार हुआ तो सारे राज खोलूंगा। इसलिए ही लखनऊ से लेकर हर जगह शरण में घूम रहा है। उन्होंने कहा कि आज उसके दबाव में पार्टी ने हार मान ली और एक गुंडे को बचाने के लिए पूरी पार्टी से मेरे चरित्र पर सवाल उठाए गए। कोई बात नहीं, पूरे देश की महिलाओं के लिए अकेले ही लड़ती आई हूं, अपने लिए भी लडूंगी। जमकर चरित्र हनन करो, वक्त आने पर सब सच सामने आएगा। उल्लेखनीय है कि आप नेता और सांसद संजय सिंह ने कहा था कि मालीवाल के साथ हुई घटना घोर निंदनीय है। उन्होंने दावा किया था कि कुमार ने मालीवाल के साथ दुर्व्यवहार किया है।

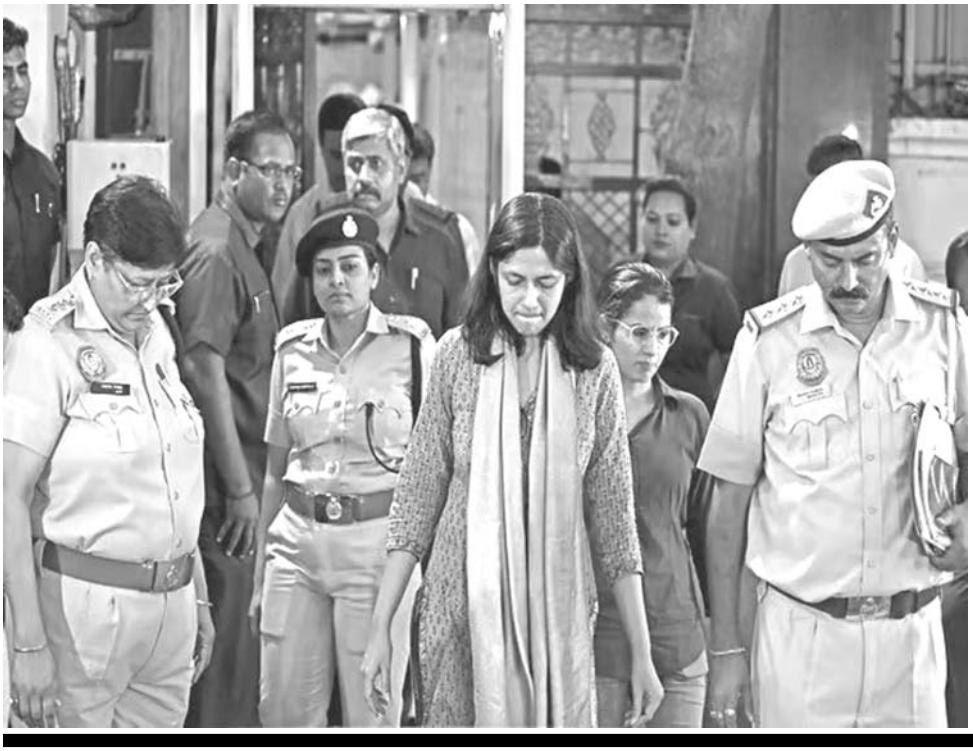

दूसरी तरफ मजिस्ट्रेट के सामने सीआरपीसी की धारा 164 के तहत दर्ज कराए गए बयान में स्वाति ने कहा कि बिभव ने उन्हें गंदी गालियां दी, थप्पड़ मारे। उनकी

शर्ट ऊपर खींच दी, जिससे बटन खुल गए और शर्ट खुल गई। वो नीचे गिरी तो उनकी छाती और पेट में लात मारी। हमले के बाद से सिर, गर्दन, पेट और बाहों में दर्द हो रहा है। घटना के बाद उन्होंने 112 नंबर पर कॉल पर पुलिस को अपराध की जानकारी दी। सनद् रहे कि बिभव कुमार के खिलाफ एफआईआर के बाद दिल्ली की सियासत गरमा गई। स्वाति की अपील के बाद भी दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा ने केजरीवाल के घर के बाहर प्रदर्शन किया। इस बीच दिल्ली महिला आयोग ने मुख्यमंत्री अरिवंद केजरीवाल के घर जाकर मामले की जांच करने का फैसला किया है। इस मामले में केजरीवाल और उनकी पत्नी सुनीता से भी पूछताछ होगी। बता दें कि राष्ट्रीय महिला आयोग की प्रमुख रेखा शर्मा ने कहा कि बिभव ने नोटिस लेने से मना कर दिया। उन्हें दूसरा नोटिस भेजा गया है। एनसीडब्ल्यू की टीम इस मामले में अरविंद केजरीवाल के घर जाकर जांच करेगी। केजरीवाल और उनकी पत्नी से भी पूछताछ होगी। वही भाजपा महिला मोर्चा की दिल्ली इकाई ने आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल से बदसलूकी के मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास के पास विरोध प्रदर्शन किया। महिला मोर्चा अध्यक्ष ऋचा पांडे मिश्रा के नेतृत्व में चूड़ियां पहने हुए प्रदर्शनकारियों ने केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार द्वारा मालीवाल से कथित बदसलूकी के मामले में मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांग की। उन्होंने कहा कि महिला मोर्चा केजरीवाल को उनके आधिकारिक आवास पर मालीवाल के साथ घटी घटना पर चुप्पी साधने के लिए चूड़ियां सौंपना चाहता था। दिल्ली पुलिस ने मालीवाल से इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की, जिसमें केजरीवाल के निजी सहायक बिभव कुमार को आरोपी बनाया गया। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त पीएस कुशवाहा के नेतृत्व में दो सदस्यीय टीम द्वारा मालीवाल का बयान दर्ज करने के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई। स्वाति मालीवाल ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर अपनी पोस्ट में कहा कि मेरे साथ जो हुआ वो बहुत बुरा था। मेरे साथ हुई घटना पर मैंने पुलिस को अपना स्टेटमेंट दिया है। मुझे आशा है कि उचित कार्यवाही होगी। उन्होंने कहा कि पिछले दिन मेरे लिए बहुत कठिन रहे हैं। जिन लोगों ने प्रार्थना की उनका धन्यवाद करती हूं। जिन लोगों ने Character Assassination करने की कोशिश की, ये बोला की दूसरी पार्टी के इशारे पर कर रही है, भगवान उन्हें भी खुश रखे। देश में अहम चुनाव चल रहा है, स्वाति मालीवाल जरूरी नहीं है, देश के मुद्दे जरूरी हैं। भाजपा वालों से खास गुजारिश है इस घटना पे राजनीति न करें।

बहरहाल, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास का कथित सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद आम आदमी पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल ने कहा कि 'राजनीतिक हिटमैन' ने स्वयं को बचाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। मालीवाल 52 सेकंड के वीडियो में मुख्यमंत्री के आवास में सुरक्षाकर्मियों से बहस करती नजर आ रही हैं। हालांकि स्वाति ने यह स्पष्ट नहीं किया है वह 'राजनीतिक हिटमैन' कौन है। संभवत: उनका इशारा केजरीवाल की तरफ ही है। मालीवाल ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर किसी का नाम लिए बगैर लिखा कि हर बार की तरह इस बार भी इस 'राजनीतिक हिटमैन' ने खुद को बचाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। उन्होंने कहा कि इसे लगता है कि वह इस अपराध को अंजाम देने के बाद अपने लोगों से ट्वीट कराके और संदर्भहीन वीडियो साझा करके खुद को बचा लेगा। कोई किसी को पीटते हुए वीडियो बनाता है भला? घर के अंदर की और कमरे की सीसीटीवी फुटेज की जांच होते ही सत्य सबके सामने होगा। उन्होंने आगे लिखा कि जिस हद तक गिर सकता है गिर जा, भगवान सब देख रहा है। एक ना एक दिन सब की सच्चाई दुनिया के सामने आएगी। कथित वीडियो में मालीवाल को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि उन्होंने पुलिस नियंत्रण कक्ष को फोन किया है और वह पुलिसकर्मियों के आने तक इंतजार करेंगी। वह वीडियो में कह रही हैं कि आज मैं इन लोगों को सबको बताऊंगी। मुझे डीसीपी (पुलिस उपायुक्त) से बात करने दो। वह सुरक्षाकर्मी को चेतावनी देती सुनाई दे रही हैं कि यदि वह उन्हें छूता है तो वह उसे भी नौकरी से निकलवा देंगी। दिगर बात है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार पर लगे कथित मारपीट के आरोपों को पार्टी द्वारा निराधार बताकर खारिज किए जाने पर स्वाती मालीवाल ने निशाना साधते हुए कहा कि एक 'गुंडे के दबाव' में झुकी 'आप' अब उनके चरित्र पर सवाल उठा रही है। दूसरी ओर, एक्स पर #Kejriwal Resign दिनभर ट्रेंड होता रहा।

इस बीच, मालीवाल ने दिल्ली पुलिस को टैग करते हुए एक्स पर लिखा है- मुझे सूचना मिली है कि अब ये लोग घर के CCTV से छेड़छाड़ करवा रहे हैं।

गौरतलब हो कि मालीवाल मारपीट मामले में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि यह 'आप' का अंदरूनी मसला है और इस मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ही कोई फैसला लेंगे। मैं हमेशा महिलाओं के साथ खड़ी रहती हूं। चाहे वह किसी भी पार्टी की हों। यह आम आदमी पार्टी का मामला है और वही इस पर निर्णय लेगी। प्रियंका ने कहा कि किसी भी महिला के साथ अभद्र व्यवहार हो, कोई भी अत्याचार हो तो मैं उस महिला के पक्ष में खड़ी हूं और बोलूंगी। वह (मालीवाल) किसी और पार्टी में हैं, वह बात करेंगी तो मैं (मुद्दे पर बात) करुंगी। अगर ऐसा हुआ है और केजरीवाल जी को मालूम है तो केजरीवाल जी सही कार्रवाई करेंगे। इसका समाधान खोजेंगे। वही भारतीय जनता पार्टी ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल पर कथित हमला मामले की जांच में किसी को बाधा नहीं डालनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह पता लगाने के लिए जांच करने की जरूरत है कि घटना के वक्त दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास पर कौन-कौन मौजूद था और उनकी क्या भूमिका थी। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने यहां एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि केजरीवाल के आवास पर उनके परिवार और कार्यालय के कौन-कौन लोग मौजूद थे, उनकी क्या भूमिका थी और जब मालीवाल की पिटाई की जा रही थी तब उन्होंने क्या देखा, ये जांच का हिस्सा हैं। मैं भाजपा की प्रवक्ता हूं, पुलिस की नहीं। मैं केवल यह अनुरोध करूंगी कि कोई भी जांच में बाधा न डाले। ईरानी इस मुद्दे पर केजरीवाल के माता-पिता से पूछताछ करने के दिल्ली पुलिस के कदम को लेकर भाजपा पर आम आदमी पार्टी के हमले के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब दे रही थीं। उन्होंने कहा कि तथ्य यह है कि केजरीवाल को आरोपी और उसके सहयोगी बिभव कुमार के साथ यात्रा करते देखा गया है, जिससे संकेत मिलता है कि मामले में उनकी वफादारी किसके प्रति है। उन्होंने सवाल किया, ''क्या उनसे न्याय की उम्मीद की जा सकती है?'' दिल्ली के मुख्यमंत्री पर निशाना साधते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता ने पूछा कि केजरीवाल देश में महिला सुरक्षा पर कैसे बोल सकते हैं जब उनकी पार्टी की महिला सदस्य उनके ही आवास पर सुरक्षित नहीं है। केजरीवाल ने कहा था कि वह इस मामले में निष्पक्ष जांच की उम्मीद करते हैं और न्याय किया जाना चाहिए। आप की राज्यसभा सदस्य मालीवाल ने आरोप लगाया है कि 13 मई को जब वह मुख्यमंत्री से मिलने गई थीं तो केजरीवाल के निजी सहायक ने उन पर 'हमला' किया। पुलिस मामला दर्ज कर इस सिलसिले में कुमार को गिरफ्तार कर चुकी है। ईरानी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में लोगों से आबकारी नीति मामले में दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को जमानत देने से इनकार करने वाले दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को पढ़ने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि अदालत ने तीन मुख्य टिप्पणियां कीं जो सिसोदिया और अन्य आरोपियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों को बल देती हैं। अदालत ने कहा है कि आप नेता के खिलाफ प्रथम दृष्ट्या मामला बनता है और उन्होंने भ्रष्टाचार के लिए सरकार में अपने पद का दुरुपयोग किया। ईरानी ने अदालत के आदेश का हवाला देते हुए कहा कि उन्होंने सबूतों को भी नष्ट किया और वह गवाहों पर दबाव डालने की क्षमता में हैं। उन्होंने दावा किया कि इस घोटाले में केजरीवाल के साथ सिसोदिया ने भी अहम भूमिका निभाई। उन्होंने आरोप लगाया कि बदलाव और सेवा के नाम पर सत्ता हथियाने वाली पार्टी का पर्दाफाश हो गया है कि उसने किस तरह सरकारी खजाना लूटा। वही दूसरी तरफ भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए केजरीवाल से पूछा कि कुमार के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई जबकि उनकी पार्टी के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने हाल ही में एक संवाददाता सम्मेलन में स्वीकार किया था कि मालीवाल के साथ दुर्व्यवहार किया

गया था। त्रिवेदी ने आरोप लगाया कि एक महिला सांसद के साथ ऐसा दुर्व्यवहार! इस पर कार्रवाई करने के बजाय, आप उनके चरित्र हनन में लगे हैं। त्रिवेदी ने इस मामले में भाजपा की संलिप्तता का आरोप लगाए जाने को लेकर भी केजरीवाल पर निशाना साधा और उनसे पूछा, क्या आपने इस घटना की कोई जांच कराई? अगर नहीं तो किस आधार पर आप किसी निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं। मालीवाल ने आरोप लगाया था कि दिल्ली सरकार के मंत्री उनके बारे में 'झूठ' फैला रहे हैं। उन्होंने उन्हें अदालत में ले जाने की धमकी दी थी। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में आप के नेताओं के उन आरोपों का भी खंडन किया कि उन्होंने भाजपा के इशारे पर कुमार के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है क्योंकि उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का मामला दर्ज है।

बहरहाल, राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने बताया कि आप नेताओं पर किस तरह उनके खिलाफ करने के लिए दबाव डाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी स्वाभिमान की लड़ाई शुरू की है, इंसाफ मिलने तक लड़ाई लड़ती रहूंगी। हार नहीं मानूंगी। स्वाति मालीवाल ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर अपनी पोस्ट में कहा कि कल पार्टी के एक बड़े नेता का फोन आया। उसने बताया कैसे सब पर बहुत ज्यादा दबाव है, स्वाति के खिलाफ गंदी बातें बोलनी हैं, उसकी पर्सनल फोटोज लीक करके उसे तोड़ना है। ये बोला जा रहा है कि जो उसको सपोर्ट करेगा उसको पार्टी से निकाल देंगे। उन्होंने कहा कि किसी को PC करने की और किसी को ट्वीट्स करने की ड्यूटी मिली है। किसी की ड्यूटी है अमेरिका में बैठे वॉलंटियर्स को फोन करके मेरे खिलाफ कुछ निकलवाना। आरोपी के कुछ करीबी बीट रिपोर्टर्स की ड्यूटी है कुछ फर्जी स्टिंग ऑपरेशन बनाकर लाओ। तुम हजारों की फौज खड़ी कर दो, अकेले सामना करूंगी, क्योंकि सच मेरे साथ है। स्वाति ने कहा कि मुझे इनसे कोई नाराजगी नहीं है, आरोपी बहुत शक्तिशाली आदमी है। बड़े से बड़ा नेता भी उससे डरता है। किसी की हिम्मत नहीं उसके खिलाफ स्टैंड ले पाए। मैं किसी से उम्मीद भी नहीं करती। दुख इस बात का लगा कि दिल्ली की महिला मंत्री कैसे हंसते मुस्कुराते पार्टी की एक पुरानी महिला साथी का चरित्र हरण कर रही है। डीसीडब्ल्यू की पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि मैंने अपनी स्वाभिमान की लड़ाई शुरू की है, इंसाफ मिलने तक लड़ाई लड़ती रहूंगी। इस लड़ाई में मैं पूरी तरह अकेली हूं पर हार नहीं मानूंगी! वही बता दें कि दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के सक्सेना ने कहा कि आम आदमी पार्टी

की राज्यसभा सदस्य के साथ कथित मारपीट पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गहरी चुप्पी महिलाओं की सुरक्षा पर उनके रुख के बारे में बहुत कुछ बोलती है। राज निवास ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक बयान जारी किया है जिसमें सक्सेना ने कहा कि दिल्ली पुलिस मामले की जांच कर रही है और इसे तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचाया जाएगा। उन्होंने इस मामले पर आम आदमी पार्टी द्वारा उसके रुख को बदल लिए जाने को भी चौकाने वाला बताया। उपराज्यपाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल के साथ मुख्यमंत्री के आवास पर कथित मारपीट के मुद्दे पर पिछले कुछ दिनों से मीडिया में चल रही खबरों से मैं बहुत व्यथित हूं। सक्सेना ने कहा कि उन्होंने (मालीवाल) बेहद पीड़ा से मुझे फोन किया और अपने दर्दनाक अनुभव और उसके बाद अपने ही सहयोगियों द्वारा उन्हें धमकाने और शर्मसार करने के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सबूतों से कथित छेड़छाड़ और उन पर दबाव डालने पर भी चिंता व्यक्त की। वही केजरीवाल से सक्सेना ने कहा कि कम से कम शिष्टता के खातिर ही मेरे मुख्यमंत्री टालमटोल और पैंतरेबाजी करने के बजाय सफाई देते। उनकी गहरी चुप्पी महिलाओं की सुरक्षा पर उनके रुख के बारे में बहुत कुछ बताती है। उन्होंने कहा कि दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी है और पूरी दुनिया के राजनयिक यहां रहते हैं तथा ऐसी शर्मनाक घटनाएं और महिला सुरक्षा के मुद्दे पर सरकार

की असंवेदनहीन, षड्यंत्रकारी तिरस्कारपूर्ण प्रतिक्रिया पूरी दुनिया में भारत की छवि को धूमिल करती है। उपराज्यपाल ने बयान में कहा कि अगर ऐसी घटना देश के किसी अन्य मुख्यमंत्री के आवास में हुई होती तो भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण निहित स्वार्थ वाली बाहरी ताकतों ने भारत में महिला सुरक्षा को लेकर जबर्दस्त वैश्विक विमर्श छेड़ दिया होता। इस मामले में इस तरह का कोई आक्रोश न होना कई सवाल खड़े करता है जिनके जवाब नहीं है। सक्सेना ने मालीवाल का समर्थन करते हुए कहा कि वह मेरे और मेरे कार्यालय के प्रति मुखर, शत्रुतापूर्ण और स्पष्ट रूप से पक्षपातपूर्ण रही हैं और अक्सर अनुचित रूप से मेरी आलोचना करती रही हैं। सक्सेना ने कहा कि यह सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात है कि कथित अपराध स्थल मुख्यमंत्री का ड्राइंग रूम है जबकि वह कथित तौर पर घर में मौजूद थे और यह उनके निकटतम सहयोगी द्वारा एक अकेली महिला के साथ किया गया। उन्होंने कहा कि पार्टी के अन्य राज्यसभा सदस्य (संजय सिंह) ने मीडिया के सामने मालीवाल के आरोपों की पुष्टि की और आश्वासन दिया कि मुख्यमंत्री अपराधी के खिलाफ कार्रवाई करेंगे। उपराज्यपाल ने कहा कि बाद में मामले में रुख बदल लिया गया, जाहिर तौर पर उच्चतम पदाधिकारी के कहने पर। यह भी अकल्पनीय और चौंकाने वाला है। वही दिल्ली एलजी के इस कड़े रूख के बाद स्वाति मालीवाल मामले पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का पहली बार बयान आया है। केजरीवाल ने पीटीआई को दिए इंटरव्यू में कहा कि मैं इस केस में निष्पक्ष जांच और न्याय चाहता हूं, इस केस में दो वर्जन हैं।

सनद् रहे कि दिल्ली पुलिस ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव विभव कुमार को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारी के बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सहयोगी विभव कुमार ने दिल्ली की तीस हजारी

कोर्ट में अग्रिम जमानत याचिका दायर की थी, लेकिन कोर्ट ने यह याचिका खारिज कर दी। स्वाति मालीवाल मामले को लेकर आम आदमी पार्टी और भाजपा लगातार आमने-सामने है। मामले में एफआईआर के बाद दिल्ली एम्स में स्वाति मालीवाल की मेडिकल जांच कराई गई। मेडिकल रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि मालीवाल के बाएं पैर और दाई आंख के नीचे चोट के निशान हैं। आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालिवाल का आरोप है कि जब वह मुख्यमंत्री आवास पर अरविंद केजरीवाल से मिलने के लिए गई थी तो इस दौरान उनका पीए विभव कुमार ने उनके साथ बदसलूकी करते हुए मारपीट की थी। बता दें कि विभव ने अपनी गिरफ्तारी से पहले दिल्ली पुलिस को एक मेल भेजा था। उसने मेल में कहा था कि वह जांच में पहले से ही सहयोग कर रहा है, जबकि उसे पुलिस से कोई नोटिस नहीं मिला है। विभव ने मेल में लिखा है कि अधोहस्तारक्षित को मीडिया के माध्यम से यह ज्ञात हुआ है कि सिविल लाइन्स थाने में एक मामला दर्ज किया गया है, जिसमें अध ोहस्तारक्षित को आरोपी के रूप में नामजद किया गया है। यद्यपि अध ोहस्तारक्षित को अब तक कोई नोटिस नहीं मिला है, फिर भी वह स्पष्ट रूप से यह बयान देता है कि वह जांच में सहयोग करने को तैयार है और मामले के जांच अधिकारी द्वारा जब भी उसे बुलाया जाता है, वह जांच में शामिल होने के लिये तैयार है। विभव ने इस मेल में मालीवाल के खिलाफ अपनी ओर से की गई शिकायत का भी उल्लेख किया गया है। उसने मेल में लिखा कि अनुरोध है कि शिकायत को रिकॉर्ड पर दर्ज किया जाये और कानून के मुताबिक उसकी जांच-पड़ताल की जाए।

बहरहाल, अब सवाल उठ रहे हैं कि क्या अब देश में महिला सांसदों को भी खतरा है? रिपोर्टों के मुताबिक मालीवाल ने सीएम हाउस से पुलिस को फोन किया और वहां आने के लिए कहा। लेकिन जब पुलिस वहां पहुंची तो मालीवाल वहां नहीं थीं। बाद में मालीवाल खुद सिविल लाइंस थाने भी गईं लेकिन कोई रिपोर्ट नहीं लिखवाई और वहां से चली गई। इसके बाद सांसद संजय सिंह ने एक प्रेस वार्ता आयोजित कर यह माना कि कुमार ने मालीवाल के साथ अभद्रता की थी और मुख्यमंत्री ने कुमार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के लिए कहा है। लेकिन अगले दिन जब केजरीवाल और संजय सिंह सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिलने लखनऊ गए तो वहां कुमार को केजरीवाल के साथ देखा गया। प्रेस वार्ता के दौरान केजरीवाल और सिंह से इस संबंध में सवाल भी किए गए लेकिन उन्होंने जवाब नहीं दिया। दिल्ली की राजनीति के जानकार इस पूरे प्रकरण को 'आप' की अंदरूनी कलह के नतीजे के रूप में देख रहे हैं। लेकिन इस मामले में राजनीति के अलावा बड़ा सवाल महिला सुरक्षा का भी है। मुख्यमंत्री आवास में किसी महिला, और वो भी सांसद के साथ मारपीट होना अपने आप में चिंताजनक मामला है। केजरीवाल, मालीवाल और कुमार, तीनों पुराने साथी हैं। राजनीति में आने से पहले जब केजरीवाल एक आरटीआई कार्यकर्ता थे, तब मालीवाल और कुमार उनके साथ उनके एनजीओ परिवर्तन और पीसीआरएफ के लिए काम करते थे। 'आप' में आज भी ऐसे लोग हैं जो उस जमाने से केजरीवाल के साथी हैं। 'लोकपाल' आंदोलन के बाद जब एक राजनीतिक पार्टी बनाने का फैसला लिया गया तो उस समय मालीवाल इस फैसले से सहमत नहीं थीं। वो राजनीति से बाहर रहना चाहती थीं और वो बाहर रहीं भी। जुलाई 2015 में उन्हें दिल्ली सरकार ने दिल्ली महिला आयोग का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। बाद में उन्हें इसी पद पर एक और कार्यकाल के लिए नियुक्त किया गया लेकिन जनवरी, 2024 में पार्टी ने उन्हें राज्यसभा के लिए मनोनीत किए जाने के बाद उन्होंने आयोग से इस्तीफा दे दिया और सांसद बन गईं। दिल्ली की आबकारी नीति में कथित अनियमितताओं के मामले में केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद यह सवाल उठे कि मालीवाल और पार्टी के एक और सांसद राघव चड्ढा मुखर रूप से केजरीवाल की रिहाई की मांग करते हुए नजर क्यों नहीं आ रहे हैं। पार्टी ने स्पष्ट किया कि दोनों सांसद उस समय निजी और पारिवारिक कारणों से देश से बाहर थे। लेकिन अब इस एफआईआर के बाद इन अटकलों ने और तूल पकड़ लिया है कि कहीं इन दोनों और पार्टी के बीच गहरे मतभेद तो नहीं हो गए हैं। इसके अलावा सांसद होने के नाते मालीवाल पर हमला होना सांसद के विशेषाधिकार के हनन का मामला भी है। ऐसे मामलों का अमूमन संसद भी संज्ञान लेती है और संबंधित लोगों, संस्थाओं को नोटिस जारी करती है। मालीवाल के मामले में ऐसा अभी तक नहीं हुआ है।

PM Modi files nomination from Varanasi after seeking permission from Kotwal of Kashi

Prime Minister and local MP Narendra Modi on Tuesday filed nomination as Bharatiya Janata Party (BJP) candidate from Varanasi parliamentary constituency for the third time on Tuesday. The PM reached Varanasi Collectorate District Court at around 12 noon and filed his nomination. His proposers Ganeshwar Dutt Shastri and Sanjay Sonkar along with Chief Minister Yogi Adityanath were present at the time of the nomination. This is the third time Modi is seeking reelection from the Varanasi Lok Sabha seat. Before this, he won the general election from here with a record margin in the 2014 and 2019. Ahead of filing his nomination, he went to Dasashwamedh Ghat and offered prayers to Ganga and performed aarti. After this he took a cruise ride and reached Kal Bhairav Temple, also known as Kotwal of Kashi, and sought his blessings and permission for nomination. To get a glimpse of Modi, a huge crowd of people had gathered on both sides of the road and they welcomed the PM with chants of Har Har Modi and Jai Shri Ram. Before the PM reached the nomination venue, BJP President JP Nadda, Union Home Minister Amit Shah, Defence Minister Rajnath Singh, Chief Ministers of BJP-ruled states and prominent leaders and officials of BJP and constituent parties had registered their presence there. Modi reached Varanasi on a two-day visit to his parliamentary constituency.

Ex-Congress leader Radhika Khera and actor Shekhar Suman join BJP

Former Congress leader Radhika Khera and actor Shekhar Suman on Tuesday joined the BJP amid the ongoing Lok Sabha election. They joined the party in the presence of BJP General Secretary Vinod Tawad and other senior leaders at party headquarters in New Delhi. Khera, the former national coordinator of the Congress's media department, resigned from the party's primary membership on Sunday, days after her altercation with another leader at the party's Chhattisgarh office. Speaking after joining the BJP Khera said, "The manner in which I was misbehaved with on the land of Kaushalya Mata for being a devotee of Ram, for having darshan of Ram Lalla, I would not have been able to reach here if I had not got the protection of the BJP government and the Modi government'. "Today's Congress is not Mahatma Gandhi's Congress, it is anti-Ram, anti-Hindu Congress", she added. Making an initial remark after joining BJP, Shekhar said, 'Till yesterday I don't know that I would be sitting here today because many things in life happen knowingly or unknowingly. I have come here with a very positive thinking and I would like to thank God that he ordered me to come here.' Shekhar Suman was earlier a member of the Congress party and had fought the Lok Sabha election in 2009 from Bihar's Patna Sahib on a Congress ticket and lost to BJP's Shatrughan Sinha.

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☆ नाराजी याचिका : Informant/Victim के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय।

यदि पुलिस द्वारा अन्वेषण किये जाने और क्लोजर रिपोर्ट दाखिल किये जाने की सम्पूर्ण प्रक्रिया पर नजर डाली जाए तो हम यह पाएंगे कि पुलिस को मामले की सूचना देने वाला शख्स/पीड़ित बिना उपाय के हो जायेगा यदि नाराजी याचिका दाखिल करते हुए उसे पुलिस की क्लोजर रिपोर्ट (या सामान्य रूप से पुलिस अन्वेषण के निष्कर्ष) पर अपनी आपत्ति जताने का उसे मौका न मिले। ऐसे व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए ही नाराजी याचिका की अवधारणा को अदालतों द्वारा काफी तरजीह दी जाती है।

☆ सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने पर कितने वर्षों तक की सजा हो सकती है ?

जो कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति पर जो लोक सेवक हो उस समय जब वैसे लोक सेवक होने के नाते वह अपने कर्तव्य का निष्पादन कर रहा हो तो इस आशय से की उस व्यक्ति को वैसे लोक सेवक के नाते अपने कर्तव्य के निर्वहन से रोकने या डराने या ऐसे लोक सेवक के नाते उसके अपने कर्तव्य के विधि पूर्वक निर्वहन में की गई या की जाने के लिए किसी बात के परिणाम स्वरुप हमला करेगा या आपराधिक बल का प्रयोग करेगा वह दोनों में से किसी भी प्रकार के कारावास की अवधि 2 वर्ष तक की हो सकेगी या जुर्माना से या दोनों से दंडित किया जा सकता है इसकी व्यवस्था भारतीय दंड संहिता की धारा 353 में की गई है।

☆ क्या न्यायालय के खिलाफ पत्रिका या किसी भी मीडिया में समाचार छापना या दिखाना न्यायिक अवमानना का अपराध होता है?

न्यायालय अवमानना अधिनियम 1971 (कंटेंप्ट ऑफ कोर्ट 1971) की धारा 5 के अनुसार न्यायिक कार्य की उचित आलोचना अवमानना नहीं कहलाती है ।इस धारा के अनुसार कोई व्यक्ति किसी ऐसे मामले की जिसकी सुनवाई हो चुकी हो और उसमें न्यायालय द्वारा अंतिम रूप से फैसला दिया जा चुका हो उसके गुण अवगुण पर किसी उचित आलोचना का प्रकाशन करने या प्रसारण करने पर न्यायालय अवमानना का अपराध नहीं होता है कंटेंप्ट ऑफ कोर्ट के अपराध मे धारा 12 के अनुसार जो कोई व्यक्ति न्यायालय अवमानना का दोषी पाया जाएगा उसे सादे कारावास से जिसकी अवधि 6 माह तक की हो सकती है दंडित किया जा सकता है।

☆ क्या पुलिस किसी अपराधी की गिरफ्तारी करते समय गिरफ्तारी का विरोध करने पर उसकी हत्या भी कर सकती है?

यदि कोई व्यक्ति गिरफ्तारी का बलपूर्वक विरोध करता है तो पुलिस अधिकारी हत्या के अभियुक्त व्यक्ति की मृत्यु कारित कर सकता है किंतु दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 46 (3) से यह स्पष्ट होता है कि यदि मृत्यु या आजीवन कारावास से दंडनीय अपराध का अभियुक्त अपनी गिरफ्तारी का बलपूर्वक विरोध करता है तो पुलिस अधिकारी उसकी मृत्यु कारित कर सकता है या अगर खतरनाक अपराधी जिस पर हत्या का आरोप हो वह कैद से फरार हो रहा हो तो उसकी हत्या पुलिस कर सकती है या सेल्फ डिफेंस में भी पुलिस वैसे मुदालय की हत्या कर सकती है। पुलिस द्वारा फर्जी एनकाउंटर के मामले भी काफी चर्चा में इन दिनों रहे हैं खासकर उत्तर प्रदेश राज्य में कई फर्जी एनकाउंटर की बातें मीडिया में सुनने को मिली है जब भी कोई एनकाउंटर का विरोध होता है तो सरकार उसे सीबीआई के हवाले जांच करने के लिए भेज देती है ताकि उनके सरकार की फजीहत ना हो।

☆ क्या दो नपुंसको या दो पुरुषों या स्त्रियों के बीच किया गया विवाह वैध होता है?

दो नपुंसको के बीच किया गया विवाह शुन्य होता है यही बात दो पुरुषों के बीच या दो महिलाओं के बीच किया गया विवाह के ऊपर भी लागू होता है क्योंकि विवाह के लिए दो पक्ष कार होनी चाहिए जिनमें एक पक्षकार का पुरुष होना तथा दूसरे पक्षकार का स्त्री होना आवश्यक होता है इसलिए यदि दो पुरुष आपस में विवाह करते हैं तो वह विवाह शुन्य माना जाएगा या दो महिला आपस में विवाह करती है तो भी वह विवाह शुन्य होता है।

☆ क्या किसी मुकदमे को लड़ने से वकील मना कर सकता है?

सुप्रीम कोर्ट ने अधिवक्ता समुदाय को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण निर्णय दिया था कि वकील या उनके संगठन किसी अभियुक्त की ओर से न्यायालय में पेश होने से इंकार नहीं कर सकते हैं भले ही वह आतंकी बलात्कारी हत्यारा या कोई अन्य क्यों ना हो ,इस तरह का कोई भी इनकार संविधान का बार काउंसिल के मानकों का और भगवत गीता के सिद्धांत का उल्लंघन होगा। न्यायाधीश मार्कंडेय काटजू और ज्ञान सुधा मिश्रा की पीठ ने अपने एक आदेश में इस बात पर चिंता व्यक्त की थी कि देशभर में बार एसोसिएशन और वकीलों द्वारा किसी न किसी कारण से अभियुक्तों की ओर से न्यायालय में पेश नहीं होने का चलन बढ़ रहा है ।न्यायमूर्ति कि उक्त खंडपीठ ने टिप्पणी करते हुए कहा है कि पेशेवर आचार नीति की मांग है कि यदि मुदालय फीस देने को तैयार है तो वकील बहस करने से इनकार नहीं कर सकता है इसलिए बार एसोसिएशन का इस तरह का प्रस्ताव कि उनका कोई भी साथी किसी खास अभियुक्त के मामले में न्यायालय में पेश नहीं होगा संविधान कानून और पेशेवर आचार नीति के सभी मानदंडों के विरुद्ध तथा बार एसोसिएशन की महान परंपरा के भी विरुद्ध है जो हमेशा किसी अपराध के लिए अपराधी का बचाव करने के लिए तत्पर रहती है। वर्ष 2007 में एक आंदोलन के दौरान पुलिसकर्मियों और कोयंबटूर के वकीलों द्वारा एक दूसरे के विरुद्ध दार आपराधिक मामलों को खारिज करते हुए खंडपीठ ने उपर्युक्त निर्णय दिया था।

☆ दहेज देने या लेने के लिए कानून में कितने वर्षों तक की सजा का प्रावधान है ?

यदि कोई व्यक्ति दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 के प्रावधान लागू होने के पश्चात दहेज देगा या लेगा अथवा दहेज देने या लेने के लिए दुश प्रेरित करेगा तो उसे 5 वर्षों तक की सजा और कम से कम 15000 रूपये तक का जुर्माना या ऐसे दहेज के मूल्य तक की राशि इनमें से जो भी अधिक हो की सजा दी जा सकती है इसकी व्यवस्था दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3 में किया गया है साथ ही अगर कोई व्यक्ति दहेज के लिए या किसी अन्य बातों के लिए अपनी पत्नी के प्रति क्रूरता का व्यवहार करता है या क्रूरता करता है तो इसके लिए दंड की व्यवस्था भारतीय दंड संहिता की धारा 498 ए में किया गया है जिसके तहत दोषी व्यक्ति को 3 वर्षों तक के लिए कारावास और जुर्माना हो सकता है यह एक संगेय अपराध माना जाता है साथ ही यह अजमानती भी होता है इसका विचारण फर्स्ट क्लास जुडिशल मजिस्ट्रेट करते हैं।

GSTIN : 10KEPD0123PIZP

उत्तर भारत का COOKIE MAKER, सीवान में पहली बार
आपके लिए लेकर आया है

Cookie का बेहतर श्रृंखला

PRATIK ENTERPRISES

राजपुर (रघुनाथपुर) में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा रस्क, बिस्कुट, बर्गर, मीठा ब्रेड, वंद, क्रीम रोल, पेटीज और बर्ड डे केक, पार्टी केक ग्राहकों के मनपसंद तैयार किया जाता है।

शुद्धता एवं स्वाद की 100% गारंटी

किसी भी अवसर पर
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रतीक फुड कंपनी

प्रतीक इंटरप्राइजेज, प्रतीक पतंजलि
राजपुर, रघुनाथपुर, सीवान (बिहार)

-: सौजन्य से :-

ब्रजेश कुमार दुबे

Mob.-9065583882, 9801380138

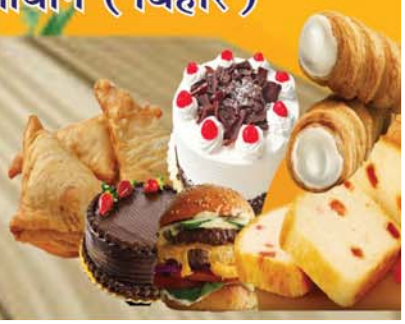

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

Westerlin Drugs Pvt. Ltd. — Dispersing Happiness

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008